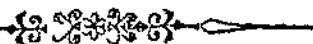
श्रीखरतरगच्छगगनांगणनभोमणि आचार्यवर्य श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराज्ञावर्ती कविशेखर महोपाध्याय श्रीजिनहर्षजी गणिकृत

श्रीपाल राजाका रास. (सचित्र)



सपादक व संशोधक—

श्रीखरतरगच्छनायक क्रियोद्धारक शासनप्रभावक श्रीमोहनलालजी महाराजके प्रशिष्यरत्न स्व० अनुयोगाचार्य पंन्यासप्रवर

श्रीमत् केशरमुनिजी महाराज—

प्रकाशक—

उक्त पन्यासजी महाराजकेही उपदेशद्वारा सभात अनेकगृहस्थोंकी द्रव्य सहायसे श्रीजिनदत्तसूरिजी ज्ञानभंडार मुंबईके कार्यवाहक

झवेरी—मूलचंद हीराचंद भगत

"निर्णयसागरयन्त्रणालय" कोलभाटलेन २६—२८ नबरमे रामचन्द्र येसू शेडगेद्वारा मुद्रित कराके प्रकाशित किया।

वीरसंवत् २४६२ | कीमत १—०—० | विक्रमसंवत् १९९२

द्रव्यसहायकोंके शुभ नाम—

४२५ शा० ताराचंदजी सगाजी, चूडा, मारवाड
१०१ शा० छोगमलजी नथाजी, चूडा ,,
१०१ झवेरी-केसरीचंद कल्याणचंद, सुरत
१०१ शा० जीताजी तुमाजी, कवराडा, मारवाड
१०० शेठ किसनमलजी सवलालजी रूणावत, पाली, मारवाड
५१ शेठ गणेशमलजी सोभागमलजी, मुंबई
५१ शेठ भीमराजजी देवीचंदजी, सींवरीवाले, मुंबई
५१ शेठ हरखचंद शिवजी, कच्छभुज
५१ शा० भीकमचंदजी नवलाजी, चूडा, मारवाड
५१ शा० फोजमलजी कपूरचंदजी, नियाज ,,
५१ शा० कसरीमलजी रतसींगजी, गुडाबालोतरा ,,
५१ शा० माणकचंद थावरभाइ (स्वबंधु मोहनलाल थावरभाइके स्मरणार्थं), कच्छमांडवी
५१ शेठाणी कुंअरबाई, कलकत्ता
५० शेठ मूलचंदजी सोभागमलजी फलोधीवाले, मुंबई
३१ शा० मोतीजी उदाजी, पादरली, मारवाड
३१ शा० रिमाजी छगनलाल, चूडा ,,
२५ शा० जैरूपजी रूपाजी, चाद्राई ,,
२५ शेठ फतेचंदजी सीहाल, पाली, मारवाड
२५ शा० दिवाजी धाधाजी, खिवाणदी ,,
२५ शा० मोणसीभाई वीरचंद, कच्छमुंद्रा
२१ शा० भैसमलजी हसाजी, पादरली, मारवाड
११ शा० पूनमचंदजी गुलाबचंदजी, तखतगढ, मारवाड
५ शा० दलीचंदजी नाथाजी, तखतगढ ,,
५ शा० रतनचंदजी भूताजी, गुडाबालोतरा ,,
५ शा० फोजमलजी केशाजी, सेवाडी ,,
४ शा० प्रतापमलजी चुनीलालजी
३ शेठ रिद्धिलालजी, मुजनवाला

समर्पण—

वादलब्धिसमलंकृत विद्वत्शिरोमणि शमदमाद्यनल्पगुणगणरत्नभंडार अनुयोगाचार्य पंन्यासप्रवर

परमपूज्य प्रातःस्मरणीय गुरुदेव श्रीमत् केशरमुनिजी महाराज !

आपने इस वालकको आवालकालसे निरतर अपने पास रखकर ज्ञानादिक गुणोंमें स्थिर रहनेके लिये जो अनुपम प्रयास किया, हरएक वखत विविध प्रकारकी शिक्षाओं द्वारा उन्मार्ग प्रवृत्तिसे वचाया, और पाषाणसम हृदयकोभी ज्ञानांकुरोंसे पल्लवितकर साहित्यसेवाका अनुरागी वनाया, इत्यादि असीम उपकारोंकी स्मृतिमें आपकाही संपादित व संशोधित और आपके ही अमृतमय उपदेशसे प्रकाशित होता हुआ यह ग्रंथरत्न "श्रीपाल राजाका रास" आपहीके स्वर्गीय पुण्यात्माको विनय भक्ति श्रद्धापूर्वक विनम्रभावसे सादर समर्पित है

विनीत—
आपका चरण सेवक
बुद्धि

प्रस्तावना–

जगतमें धर्मही एक ऐसी वस्तु है कि–जिसके आराधनसे जीव संसारसमुद्रसे पार हो सकता है । धर्माराधनके विविधप्रकारोंमें नवपदाराधनभी एक है, जो सबमें प्रधानता पाया हुआ है, उस नवपदकी महिमागर्भित यह श्रीपाल राजाका रास आज पाठकोंके सामने रखा जाता है, जोकि–विक्रम संवत् १६४० के वर्ष, पाटण शहरमें श्रीखरतरगच्छ गगनांगणनभोमणि शत्रुंजयमहात्म्यरास– उपमितिभवप्रपंचाकथारास आदि विविधरासोंके रचयिता कविचक्रचूडामणि महोपाध्याय श्रीजिनहर्षजी गणिवरका बनाया है ।

उद्देश–यद्यपि प्रस्तुत रासके सिवाय इन्हि कविवरने एक दूसराभी श्रीपालरास बनाया है, जो अत्यंत संक्षिप्त है, परंतु प्रस्तुत 'रास'का बाह्य देह अतिविस्तृत या अतिसंक्षिप्त न होनेसे ओलीके दिनोंमें सुखपूर्वक समाप्त किया जा सकता है, एवं कृतिभी बहुत सरल और भावग्राहि रोचक है, इसकी पहली आवृत्ति रायबहादूर बाबू धनपतसिंहजी दूगड मुर्शिदाबाद निवासीने छपवाइ थी, उसमें बहुत अशुद्धियां थीं और टाइपभी कलकत्तेके थे, जिससे वाचनेमें बडी असुविधा थी और वह प्रति अब मिलतीभी नहीं, इत्यादि कारणोंसे इसकी पुनरावृत्ति छपवानेकी भावना स्वर्गस्थ पूज्य गुरुदेवके हृदयमें जागृत हुइ ।

तत्पश्चात् छपी हुई प्रति परसेही यथाशक्ति संशोधन करके प्रेसकॉपी तयार करवाइ, बादमें एक प्रति हस्तलिखित बीकानेर निवासी इतिहासप्रेमी साहित्यसेवक सुश्रावक अगरचंदजी नाहटा द्वारा मिली, जोकि ज्यादा अशुद्ध नहींथी, उसके आधारपर कॉपीका संशोधन किया गया और पूज्य गुरुदेवकी देखरेखमेंही रास छपभी गया था, सिर्फ प्रस्तावना तथा ओलीकी विधि एवं चित्रादिका काम बाकी

रहाथा, इसके विचारमें एव अन्यान्य कार्यकी व्यग्रतामें कुछ टाइम निकल गया, इतनेमें **"श्रेयासि बहुविघ्नानि"** इस नियमानुसार सवत् १९९३ के कार्तिक शु० ६ के रोज परमपूज्य गुरुदेवका अकस्मात् स्वर्गवास होजानेसे इसके प्रकाशनमें अधिक विलव हुआ।

पहले विचार यहथा कि—कठिन शब्दोंके अर्थ टिप्पनीमें देदिये जॉय और पहले फारममें कियाभी वैसाही, परतु सयोगकी प्रतिकूलताके कारण आगे वैसे न करके केवल मूलही छपवाया है।

स्थलसकोचके कारण कविवरका परिचय यहा नहीं दिया गया जाननेकी अभिलाषावाले वाचक गण देवचद लालभाइ जैन पुस्तकोद्धार फड सुरत द्वारा प्रकाशित "आनदकाव्यमहोदधि" मौक्तिक चोथेकी प्रस्तावना आचार्य श्रीबुद्धिसागरसूरिजी लिखित, यथा मोहनलाल दलीचद देसाइ सोलीसिटर लिखित "गुर्जर कविओ" नामकी पुस्तक देखलें।

इसके प्रकाशनमें पूज्यपाद प्रात स्मरणीय स्वर्गस्थ गुरुदेवके अमृतमय उपदेशसे जिन जिन महानुभावोंने उदार चित्तसे द्रव्य सहायता देके अपनी न्यायोपार्जित लक्ष्मीको सफल करी है, जिनके नाम टाइटलपेजके मुखपृष्ठपर दिये गये हैं, उन सबको यहा धन्यवाद दिया जाता है, अन्य धनवानोंकोभी ऐसे साहित्यसेवाके शुभकार्यमें इनका अनुकरण अवश्य करना योग्य है।

अंतमें—यद्यपि इसका मुद्रण व सशोधन कार्य स्वर्गस्थ पूज्य गुरुदेवके करकमलोंसे बडी सावधानीके साथ हुआ है, तथापि छाद्मस्थिक स्वभावानुसार दृष्टिदोषसे या प्रेसके कर्मचारियोंकी गफलतसे जो कोई अशुद्धि दृष्टिगत हो तो सज्जनोंसे नम्र प्रार्थना है कि—वे सुधारके पढे।

स्वर्गस्थ अनुयोगाचार्य विद्वत्शिरोमणि परमपूज्य गुरुदेव पन्यासजी— श्री १००८**श्रीकेशरमुनिजी** महाराज इस श्रीपालरासके सपादक व सशोधक हैं अत उचित है कि उनका कुछ जीवनपरिचय करादिया जाय, इस लिये उनका सक्षिप्त जीवनपरिचय यह आगे दिया जाता है—

इस ग्रंथके संपादक विद्वत् शिरोमणि अनुयोगाचार्य म० पन्यासप्रवर श्रीमत्केशरमुनिजी महाराजका

संक्षिप्त जीवनपरिचय—

मारवाड देशकी राजधानी जोधपुरसे दक्षिणमें २० कोशके फासले पर चूडा नामका एक मुख्य गाम है, वहांपर वि० सं० १९३२ के माघ वदि अमावसको आधीरातके समय शुभलग्नमें आपका जन्म हुआथा, पिताका नाम शाह रतनाजी एवं माताका नाम रंभादेवी था, आपका शुद्धका नाम गृहस्थपणेमें केसरमलजी था, बाल्य अवस्थासे ही ज्ञानाभ्यास तथा धार्मिक क्रियाओंकी तरफ रुचि अच्छी थी।

संवत् १९४६ में आप मुंबई आकर व्यापारमें जुडे और थोडेही दिनोंमें अपने बुद्धिबलसे व्यापार क्रियामें कुशलता प्राप्त करके एक सराफी दुकान उपर भागीदारीमें स्वतंत्र व्यापार करने लगे जिससे आर्थिक लाभ अच्छा होने लगाथा, इधर मुंबईमें सबसे पहले संविग्नसाधुओंका विहारद्वार खोलनेवाले शासनभावी जगत्पूज्य शासनप्रभावक खरतरगच्छगगनांगणदिनमणि क्रियोद्धारक श्री १००८ श्रीमोहनलालजी महाराजका पधारना मुंबईमें पहले प्रथम संवत् १९४७ में हुआ, व्याख्यानादिमें आते जाते केसरमलजीको महाराजसाहबका कुछ परिचय हुआ सोंही कुछ वैराग्यवासना भी प्रगटी, जबकि १९५१ के वर्ष दूसरी दफे महाराजसाहबका पधारना मुंबईमें हुआ तबसे महाराजजीके परिचयमें केसरमलजी विशेष आने लगे, ज्यों ज्यों अधिक परिचय होता गया त्यों त्यों आपकी धार्मिक रुचि बढने लगी, वह इतनेतक बढी कि जो इस असार संसारको सर्वथा त्यागकर दीक्षित होनातेकी भावनामें परिणत होगइ, परंतु वह भावना मुंबईमें सफल होनी मुश्किलथी, कारणकि— सगे संबंधी भाइ बंधु आदि तमाम कुटुंबियोंकी मौजूदगीमें मोहनीयकर्मकी प्रबलतासे अनेक विघ्न आनेकी संभावना थी, अतः आपने अपनी भागीदारीका फैसला पहले करलिया, बादमें परम-

पूज्य श्री १००८ श्रीमोहनलालजी महाराजकी रजासे मालवेमें आकर रतलामके निकटवर्ती बांगरोद गाममें महाराजके ही विद्वान् शिष्य श्रीमान् राजमुनिजी महाराजके शुभ हस्तसे विक्रम सं० गुजराती १९५२ तदनुसार हिंदी १९५३ के आषाढ सुद पंचमीके शुभ दिनको भागवती दीक्षा अंगीकार करी और पूज्यपाद श्रीमान् मोहनलालजी महाराजकी आज्ञानुसार श्रीहेममुनिजी महाराजके शिष्य बने।

पहला चोमासा रतलाममें हुआ, पूज्य श्रीमान् राजमुनिजी महाराजकी अध्यक्षतामें अध्ययन शुरु किया, क्रमशः प्रतिक्रमणादिकी पढाई पूरी करके दूसरेही वर्ष, जबकि आपका चौमासा दीक्षा गुरु श्रीमान् राजमुनिजी महाराजके साथ सादडी (मारवाड)में था, व्याकरण पढना शुरु करदिया, चौमासा उतरे बाद महाराजसाहेबकी आज्ञासे आपने विहार किया और अहमदावाद पधारकर पूज्य श्रीमोहनलालजी महाराजके दर्शनामृतसे अपने आत्माको पवित्र किया, यहांपर स्वर्गस्थ पूज्य आचार्य श्रीजिनयशःसूरिजी, उसवक्तके श्रीमान् यशोमुनिजी महाराजके पास आपने वडी दीक्षाके योगोद्वहन किये और पेथापुरमें उन्हीं महाराजके शुभहस्तसे आपकी वडी दीक्षा हुई।

तीसरा चौमासा अहमदाबादमें पूज्य श्रीमान् यशोमुनिजी महाराज आदिके साथमें और चोथा पांचवॉ चौमासा जामनगरमें पूज्य श्रीदेवमुनिजी महाराजके साथमें हुआ, इतनेतकमें व्याकरणादिका अभ्यास आपके ठीक होगयाथा, यहींपर आपने कल्पसूत्रकी टीका सुबोधिका व्याख्यानमें वांचनी शुरु करीथी, छट्ठा सातवॉ चौमासा सुरत-मुंबईमें महाराज साहेबके साथ हुआ, शुरुसेही अभ्यासकी तरफ लक्ष्य अच्छाथा, अन्यके साथ फजूल वातचीत आदि प्रपंचमें प्रवृत्ति कमथी, अतः दिनोदिन अभ्यास बढता गया, थोडेही वर्षोंमें व्याकरणमें सारस्वत चंद्रिका तथा सिद्धांतकौमुदी, न्यायमें तर्कसंग्रह मुक्तावली तथा स्याद्वादमंजरी आदि एवं काव्य कोष तथा सिद्धांतकाभी ज्ञान अच्छा संपादन किया।

संवत् १९५९ का मुंबईका चौमासा पूरा हुए बाद महाराजसाहेबकी आज्ञासे पन्यासजी श्रीमान् **यशोमुनिजी** महाराज आदि ८ साधुओंने मारवाडकी तरफ विहार किया उनमें आपभी शामिलथे, संवत् १९६० का चौमासा गुरुदेव **श्रीमोहनलालजी** महाराजकी आज्ञासे अन्य दो साधुओंके साथ आपने **शिरोहीमें** किया, यह सबसे पहला स्वतंत्र चौमासा आपकाथा, इसके बाद प्राय अधिकांश चौमासे आपके स्वतंत्रही हुए।

आपकी व्याख्यान शैली बहुत प्रशंसनीयथी, हरएक वस्तुका प्रतिपादन करतेहुए इसतरह भिन्न भिन्न करके समझातेथे कि मूर्खसे मूर्खभी वस्तुस्वरूपको भलिप्रकार समझ सकताथा। वादशक्तिभी ऐसीहीथी, प्रश्नकार चाहे जैसे जटिल प्रश्न क्यों न करले, परंतु आपकी तरफसे युक्ति व प्रमाण पूर्वक ऐसा उत्तर मिलताथाकि—जिससे प्रश्नकारको आगे कुछ बोलनेका अवकाशही नहीं रहता, लेखन कलाभी कुछ कम नहीथी, इस बातकी सावीतिके लिये आपके बनाये ग्रंथ **प्रश्नोत्तरविचार, प्रश्नोत्तरमंजरी, हर्षहृदयदर्पण** आदि विद्यमान है, जिनका प्रत्युत्तर युक्ति व प्रमाण पूर्वक आजतक किसीसे नहीं दिया गया, इसप्रकार आपकी योग्यताके कारणही खरतर गच्छकी वर्त्तमान संविज्ञशाखाके प्रथम आचार्य श्रीमान् **जिनयशःसूरिजी** उसवख्तके पन्यासजी **श्रीयशोमुनिजी** महाराज कि, जिनका फोटु इसी पुस्तकमे आपकी दहेनी तरफ दिया गया है, उन्होंने संवत् १९६६ के वर्ष **लश्कर** (गवालियर) में **भगवती** पर्यंत सूत्रोंके योगोद्वहन कराके आपको गणिपद तथा पंन्यास पदसे अलंकृत कियेथे, उन्हि पूज्य गुरुदेवके साथमें आपने सम्मेत शिखरजी आदि तीर्थोंकी यात्रा करीथी।

आपने चालीस वर्षसे कुछ अधिक समयतक निर्मल चारित्र पाला, इस दीर्घकालीन श्रामण्य पर्यायमें कच्छ दक्षिण और पंजाबके सिवाय प्राय सभी देशोंमें ज्यादा कम आपका विहार हुआ है, आगे लिखे जानेवाले स्थलोंमें आपके चौमासे इस प्रकार हुए हैं—

रतलाम २, सादडी १, अहमदावाद १, जामनगर २, सुरत ५, मुंबई ३, शिरोही १, जोधपुर २, पाली ३, बीकानेर १, लश्कर- (गवालियर) १, कलकत्ता २, बालुचर (मक्सुदाबाद) १, बिहार (पावापुरी) १, लखनौ २, दिल्ली १, चूडा (स्वजन्मभूमि) ५, अगवरी २, गुडाबालोतरा १, आहोर १, थराद १, पादरली १, पालीताणे १, इनमेंसे स० १९५९ का और स० १९९२-९३ के अंतिम २ चौमासे मिलके कुल ३ चौमासे आपके मुंबइमें हुए।

पिछले तीन वर्षोंसे आपको लीवरका दर्द लागु पडा था, जिससे ज्यादा व्याख्यानादि आपसे नहीं बनताथा, तौभी इस गत चौमासे के अंदर दूसरे भादवेमें ८० दिनसे पर्युषण करनेवालोंके आपसमें जब शनि-रविका झघडा उठा तब आपने तो कल्पसूत्रके "अंतरावि य से कप्पइ, नो से कप्पइ त रयणि उवाइणावित्तए" इस वचनानुसार पचासके अंदर ४९ दिने पहले भादवेमें यद्यपि पर्युषण करलियेथे तथापि गोडिजीमंदिरके मेनेजींग ट्रस्टि श्रीयुत मणिलाल मोहनलालभाइ आदि आगेवानोंके ३-४ वख्त आकर अत्यंत आग्रह करनेसे संघमें शांति रहनेके लिये मंगलनिमित्त कल्पसूत्र वाचकर सुनानेके वास्ते गोडिजीमें तथा सेंडहर्स्ट रोडके उपाश्रयमें अपने शिष्यादिको भेजनेकी एवं समयपर अपने खुद पधारनेकीभी जो उदारता वापरीथी उसीका यह नतीजाथा कि-संघमें यत्किंचितभी शांति रहसकी।

इस अंतिम चोमासेमें साधारणतया आपकी तबीयत ठीकही रही, ज्ञान पंचमीका उपवास किया, दूसरे दिन पारणा मजेसे किया, दुपहरको आहारपानीभी हमेशाकी तरहही किया, किसीको स्वप्नमेंभी यह खयाल नहीं हुआथा कि-आजही आप इस देहके संबंधको सदाके लिये छोडदेंगे, परंतु भाविमें जो होनेकोथा वह मिथ्या कैसे होसके, बस उसी दिन याने संवत् १९९३ कार्तिक शुक्ल ६ गुरुवारके दिनको सवा दो बजे अकस्मात् हार्टफेल होजानेसे देखते देखतेही पायधुनी-महावीर जिनालयके पिछले मकानपर खरतरगच्छके उपाश्रयमें इस

विनश्वर शील औदारिक शरीरको त्यागकर आप स्वर्गको सिधारगये, वस फिर क्या कहनाथा, यह दु खद समाचार थोडीही देरमें विजलीके वेगसे आखी मुवईमें एव तारद्वारा अन्यत्रभी सब जगह फैलगये, उसी समयसे दर्शकोंकी जो भीड शुरु हुई वह रात्रिको ११ वजेतक एव दूसरे दिन सवेरे पाच वजेसे ९ वजेतक एकसरखी लगी रही।

सप्तमीके दिन आपके देहको वालकेश्वर लेजानेके लिये ठीक ९ बजे हजारों मनुष्योंकी मेदिनीके साथ संस्कार यात्रा निकाली गयी, रस्तेमे कइ फोटु लिये गये, एक अमेरिकन तो गिरगामसे साथ हुआ सो वालकेश्वर सस्कारभूमितक पैदल चला, रस्तेमें ५–६ फोटु उसने लिये, अतमे फोटु लेनेमे किसी तरहकी रुकावट न करनेकी वावत सवका महान् उपकार मानता हुआ १० रु० धर्मादेमें देकर अपने स्थानको गया।

ठीक ११ वजे आपके देहको लेकर सव लोक वालकेश्वर वाणगगाके पास समुद्रके किनारे हिंदुस्मशानभूमिमें पहुचे, यहा योग्य स्थानपर हजारों मनुष्योंके समक्ष केवल चदनसे आपका अग्निसस्कार किया गया, उस दिन मुंवई के वहुतसे वाजार वध रहेथे।

आपहीने इस ग्रथका सशोधनादि किया है अत पाठकोंकी जानकारीके लिये आपका कुछ जीवन परिचय देना उचित समझा गया, तदनुसार जो कुछ वना यथा ज्ञात जीवनपरिचय यह उपर दिया गया है, स्थलसकोचके कारण हालतो इतनेसेही विराम लेताहु, इति शम्।

सवत् १९९३, मौन एकादशी
महावीर जिन मदिर, मडोवर खरतर
उपाश्रय, पायधुनी, मुवई

नम्र प्रार्थी–
अनुयोगार्य–श्रीमत् केशर मुनिजी गणिवर चरणाब्ज चचरीकातेवासि
बुद्धिसागर

कविरत्नलब्धिसपत्र श्रीमल्लब्धिमुनिजी महाराज रचित समराधित पञ्चप्रस्थानमयसूरिमन्त्र श्रीखरतर गच्छकी वर्त्तमान संविग्नशाखाके आद्याचार्य

श्रीजिनयशःसूरीश्वर स्तुत्यष्टक—

खरतरामलशिष्टगणार्चित, खरतरान्वयगण सुतपस्विन । सुविहितासजिनेश्वरमार्गग, प्रवरसूरियशःसुगुरु स्तुवे ॥ १ ॥ मरुधरस्थितयोधपुरोपण, ततवरौशकवंशविभूषण । करकुनन्देकुनत्सरजन्मक, प्रवरसूरियशःसुगुरु स्तुवे ॥ २ ॥ स्वजनकार्पित जेठमलाभिध, स चतुरेङ्ककुवत्सरदीक्षित । सगुरुदत्तयशोमुनिनामक, प्रवरसूरियशःसुगुरु स्तुवे ॥ ३ ॥ सुमुनिमोहनमोहनशिष्यकं, प्रवचनाष्टकमात्रविशोभितं । विमलपञ्चमहाव्रतधारक, प्रवरसूरियशःसुगुरु स्तुवे ॥ ४ ॥ समययोगसुयोगविधायक, गर्जशरांङ्केकुवत्सर प० पद । सकलसूत्रविदं मुनिसत्तम, प्रवरसूरियशःसुगुरु स्तुवे ॥ ५ ॥ खगरसाङ्केकुसूरिपद गत, प्रवरसूरिगुणौघविशोभित । प्रशमशान्तदमश्च जितेन्द्रिय, प्रवरसूरियशःसुगुरु स्तुवे ॥ ६ ॥ गतकषायमदाश्रवगारव, सकलजीवनिकायनिपालक । खरतर दशधा यतिधर्मप, प्रवरसूरियशःसुगुरु स्तुवे ॥ ७ ॥ खमुनिवेदविधौ चरमार्हत, गिरपवित्रितभूमितले वरे । अनशनं प्रविधाय दिवं गत, प्रवरसूरियशःसुगुरु स्तुवे ॥ ८ ॥ पठति य सुगुरोरिदमष्टक, प्रतिदिन शुभभावनया भवी । स्वमनइच्छितमत्र परत्र च, स लभते वरकीर्तियशः सुखम् ॥ ९ ॥

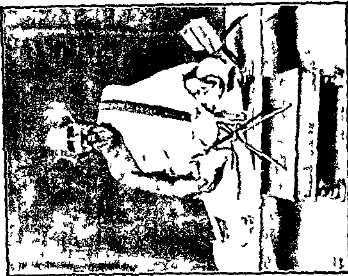
कवित्वलब्धिसम्पन्न श्रीमल्लब्धिमुनिजी महाराज रचित वादिगजकेसरी निहितनवआगमयोगानुष्ठान अनुयोगाचार्य पन्यासप्रवर

श्रीकेशरमुनिजी गणिवर स्तुत्यष्टक—

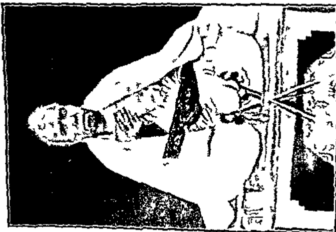
यस्याभव मरुधरस्थसुरम्यचूण्डा—ग्रामे मुने कर्—गुणा—क्षशशाङ्क वर्षे। जन्म प्रशान्तवदनस्य जितेन्द्रियस्य, पन्यास केशरमुनिः सुगुरु स जीयात् ॥ १ ॥ यो माळवस्थितजनाकुळवाङ्गरोद—ग्रामेऽग्नि—वाणे—खेग—भूमिगृहीतदीक्ष । वैराग्यरङ्गसुतरांकितभावतोऽभूत्, पन्यास केशरमुनिः सुगुरु स जीयात् ॥ २ ॥ योऽभूत्सत्खरतरामलशिष्टिवृत्तो विद्वद्वर सुविहितोऽरगमक्रियावान् । श्रीआर्य मोहनमुनिप्रवरप्रशिष्य, पन्यास केशरमुनिः सुगुरु स जीयात् ॥ ३ ॥ पन्यासयुग्गणिपद प्रवराय गोप—द्रौ शरीर—रसै—नन्दे—शशाङ्क वर्षे । यस्मै प्रदायि गुरुणा प्रविधाप्य योगान्, पन्यास केशरमुनि सुगुरु स जीयात् ॥ ४ ॥ येनार्हतीयसमये कथित यथार्थ—सत्यस्वरूपममल मुनिना प्रदर्श्य । स्पष्टीकृत प्रवलसाग—रिकपक्ष, पन्यास केशरमुनिः सुगुरु स जीयात् ॥ ५ ॥ विद्वत्तयोर्जितकुपक्षगणानिरर्थी—ईप्सितक्लरतरीयगणोऽखिलोऽपि । वाचयमेन च जर्जरितो यकेन, पन्यास केशरमुनिः सुगुरु स जीयात् ॥ ६ ॥ प्रश्नोत्तरादिवहवो रचिता वरिष्ठा, ग्रन्था शिवार्थिमनिबोधकरेण येन । सत्पञ्चदुधरमहाव्रतधारकेण, पन्यास केशरमुनिः सुगुरु स जीयात् ॥ ७ ॥ मनदगुणाङ्करसभूमिसने च मुम्बा—पुर्यां सुराज्यमगात्सुसमाधिपूर्व । ध्यायंश्च पञ्चपरमेष्ठिनमस्कृति य, पन्यास केशरमुनि सुगुरु स जीयात् ॥ ८ ॥ सद्बुद्धिद गुरुगुणौघपवित्रित य, श्रद्धालुरष्टमिद प्रपठेत्सदैव । उत्पद्यते झटिति सुन्तरलब्धि—[6]श्रीबुद्धिसागरतरङ्गगणश्च तस्य ॥ ९ ॥

---

* आज्ञा । (१) शन । (२) पुरे । ** प्ररीकृत । (३) प्रबल । (४) निराकुल । (५) राजधानीकृत । (६) लक्ष्मी ।







श्रीखरतरगच्छगगनांगणदिवाकर-जगत्पूज्य
श्रीमोहनलालजी महाराजके **मुख्यशिष्य** घोरतपस्वी
वर्तमानखरतरसंविज्ञशाखाके **प्रथम आचार्य-**

श्रीजिनयशःसूरीश्वरजी महाराज.

जन्म	दीक्षा	गणि-पं० पद	सूरिपद	स्वर्ग
१९१२	१९४०	१९५७	१९६९	१९७०
जोधपुर	जोधपुर	अहमदाबाद	मक्षूदाबाद	पावापुरी

जनेतरोंमें जैनम **जो, मान्य थे** निजपुण्यसे
सबके सदा **गुरुराज थे,** उपदेशके नैपुण्यसे ।
एस महामुनिराज **मोहन-लालजी** जो हो गये,
क्या शिष्य थे? या भूमिपर उनके, **यश का पुञ्ज?** थे॥१

सब मुनिवरोंमें आप खरतरके **प्रथम सूरीश थे,**
सचमुच कहू तो आप, हम सब **खरतरोंके ईश** थे ।
पावापुरीमें घोर तपकर, करगये **स्वर्गमन** हें,
एसे मनोहर **जिनयश -सूरीश** मेरी शरण हें ॥२॥
(मास्तर-विनयचद मोहनलाल)

श्रीसिद्धचक्र या नवपद मण्डल.

(झवेरी-जीवणचद साकरचदके सौजन्यसे सम्प्राप्त)

कुष्ठादिरोगशमक भवसिन्धुपोतम्,
दुष्प्राप्यकर्मतृणवन्हिमचिन्त्यशक्तिम् ।
सम्पत्कर परमयोगिनत नमामि,
श्रीसिद्धचक्रपदमक्षयधामदात् ॥ १ ॥

सर्वेश-सिद्ध-गणि-पाठक-साधु-सम्य
क्त्व-ज्ञान-सद्व्रत-तपोऽङ्कपदानि सन्तु ।
मे श्वेत-लोहित-सुपीत-हरित्-सुनील
श्वेतादिवर्णरुचिराणि लसत्सुखाय ॥ २ ॥
(कविवर श्रीलब्धिमुनिजी महाराज)

नि मा प्रेम

श्रीखरतरगच्छगगनांगणनभोमणि-जगद्वद्य-**श्रीमोहनलालजी**
महाराजके **प्रशिष्यरत्न**-वादलब्धिसपन्न-अनुयोगाचार्य-
पन्यासप्रवर

श्रीकेशरमुनिजी महाराज.

जन्म	दीक्षा	गणि-पं० पद	स्वर्गगमन
१९३२	१९५३	१९६६	१९९३
चूडा	वागरोद	लश्कर (गवालियर)	मुबई

जो विश्वम बहुमान्य **मोहन-लालजी** मुनिराज थे,
उन पूज्यके विद्वान सुन्दर, **शिष्यके भी शिष्य** थे ।
निजधर्मके **निन्दक** न क्यों, हो वे भले **सबसे बडे,**
उन **वादिगजके** सामने थे, **केसरी रहकर खडे** ॥ १ ॥

फिर धर्मके आक्षेपको, करते सदव **सुदूर** थे,
प्रेमी क्रियाके थे तथा शुभ, **शान्तरस भरपूर** थे ।
एसे महा **मुनिराज** हमको, छोडकर **जाते रहे,**
पन्यास **श्रीकेशरमुने !**, तुम्हे **नमन** वारवार हे ॥ २ ॥
(मास्तर-विजयचद मोहनलाल)



ॐ श्रीसिद्धचक्राय नमः

श्रीखरतरगच्छनभोमणि आचार्य श्रीजिनचंद्रसूरीश्वर वाचक श्रीसोमगणि-
शिष्य महोपाध्याय श्रीशांतिहर्ष गणि शिष्य कविवर महोपाध्याय
श्रीजिनहर्ष गणिकृत श्रीनवपद महात्म्य गर्भित

श्रीपाल राजाका रास.

दूहा—श्रीअरिहंत अनंतगुण, धरीये हीयडे ध्यान । केवल ज्ञान प्रकाश कर, दूर हरण अज्ञान ॥ १ ॥ चउद राज ऊपर रहे, सिद्ध अनंत समृद्धि । मुगति युवति सुख भोगवे, दायक अविचल सिद्धि ॥ २ ॥ आचारिज पय युग नमूं, पाले पंचाचार । गुण छत्रीस विराजता, आगम अरथ भंडार ॥ ३ ॥ कर जोडी नित प्रति नमूं, चोथे

पद उवज्झाय । द्वादशांग मुख उपदिसे, भवियण जण सुखदाय ॥ ४ ॥ अढी द्वीपमांहे नमूं, साधु सकल गुणवंत । सुमति गुपति सूधी धरे, राखे जगना जंत ॥ ५ ॥ पंच परमेष्ठि नमी करी, आणी भाव विसाल । श्रीश्रीपाल नरिंदनो, रचसुं रास रसाल ॥ ६ ॥ मंत्र यंत्र जडि ओषधी, आछे अवर अनेक । पिण नवकार समो न को, जोवो आणि विवेक ॥ ७ ॥ सिद्धचक्र आराधीये, गुणीये श्रीनवकार । भवसायर तरीये सुगम, जईये मुगति मझार ॥ ८ ॥ नवपदनो महिमा कहूं, सांभलजो नर नार ! । सामलतां सुख पामसो, सफल हुसे अवतार ॥ ९ ॥

ढाल १ ली चोपईनी–जंबू नामे द्वीप विसाल, दक्षिण भरत छे तास विचाल । देस कह्या बत्रीस हजार, मगधदेस रिद्धिवंत अपार ॥ १ ॥ वीर जिणेसर आव्या घणुं, सकल देशमें उत्तम भणुं । राजगृही नगरी गुणभरी, जाणे रची

मेहियल[1] सुरपुरी[2] ॥ २ ॥ कूआ वावि सरोवर घणा, विवहारीयानी नहीं कांई मैणा[3] । तिण नयरी श्रेणिक नरनाह[4], जिणवर आण धरे उच्छाह ॥ ३ ॥ न्याये पाले नरवर राज, सारे सहुना वाछित काज । मंत्रीसर छे अभयकुमार, च्यारे बुद्धिनो धारणहार ॥ ४ ॥ किणिहिक अवसर त्रिभुवनस्वामि[5], राजगृहीने पासे गामि । समवसर्या तिहां आवी करी, सहु हरख्या मन आणंद धरी ॥ ५ ॥ गौतमने दीधो आदेस, जाओ राजगृही सुविसेस । तव गौतम आव्या तिहां वही, लोक सहु हरख्या गहगही ॥ ६ ॥ वांदण आव्या श्रेणिक राय, नगर लोक पिण वांदण जाय । आपे प्रभु गणधर उपदेस, संजल[6] जलद[7] अनुहार[8] विसेस ॥ ७ ॥ अहो भव्य प्राणी ! तुम्हे सुणो, ए मानव भव दुर्लभ गिणो । आर्य क्षेत्र उत्तम कुल जाणि, ते पिण दुर्लभ छे मन आणि ॥ ८ ॥

१ जमीन उपर । २ देव नगरी । ३ कमी । ४ राजा । ५ तीनलोकके स्वामी वीरप्रभु । ६ पाणी सहित । ७ मेघके । ८ समान ।

धरम तणी सामग्री लही, श्रीजिनधर्म करो ऊमही । इण भव पामे रिद्वि समृद्वि, परभव पामे अविचल सिद्वि ॥ ९ ॥ इम गोतम दीधो उपदेस, सांभलियो नर नारि नरेस । पहिली ढाल एही अटकलो, कहे 'जिनहर्ष' हिवे सांभलो ॥ १० ॥ सर्व गाथा १९ ॥

दूहा–दान सील तप भावना, भेद धरमना च्यार । इह भव परभव एहथी, लहीये सुख श्रीकार ॥ १ ॥ दान सील तप माहि जो, चोथो भाव भिलंत । तो कारज सीझे सहू, वंछित सकल मिलंत ॥ २ ॥ निश्चल मन राखी करी, परिहरि मननो ताप । भाव विशुद्व हीयडे धरी, जपीये नवपद जाप ॥ ३ ॥ अरिहंत १ सिद्व २ सूरीस वर ३, उवज्झाया ४ मुनिपति ५ । दंसण ६ नाण ७ चरित्त ८ तप ९, इणसुं धरीये चित्ति ॥ ४ ॥

ढाल २ जी. अलवेलानी– ए नवपद आराधीये रे लाल, आणी निरमल भाव महाराजा रे । एहथी सहु सुख संपजे रे लाल, भवसायरनी नाव महा०, ए० ॥ १ ॥

नवपद संघाते जपे रे लाल, सिद्धचक्र (सड्ढ) चउ साल[1] महा० । ते लहे मंगल मालिकारे लाल, जिम लह्यां नृप[2] श्रीपाल महा०, ए० ॥ २ ॥ श्रेणिक कहे भगवन ! कहो रे लाल, कुण ते नृप श्रीपाल महा० । किम पामी सुख संपदा रे लाल, किम लह्यां भोग रसाल महा०, ए० ॥ ३ ॥ गौतम कहे मगधेसने[3] रे लाल, आराध्यो सिद्धचक्र महा० । रोग गयां वंछित लह्यां रे लाल, जाणे अभिनव शक्र[4] महा०, ए० ॥ ४ ॥ श्रीगौतम ! मुझने कहो रे लाल, एहनो सहु अधिकार महा० । सांभलवा मन ऊमह्यो रे लाल, सुणसे सहु नर नार महा०, ए० ॥५॥ दक्षिण भरते दीपतो रे लाल, मालव देस विख्यात महा० । दुरभिक्ष[5] न पडे जिहां कदी रे लाल, केही[6] कहीये[7] वात महा०, ए० ॥ ६ ॥ तिणे देसे नयरी भली रे लाल, उज्जेणी अभिराम[8] महा० । धण

१ साढे चार वर्ष । २ राजा । ३ मगधदेशके स्वामी श्रेणिक । ४ नवा उत्पन्न हुआ इन्द्र । ५ दुकाल । ६ क्या । ७ कहें । ८ मनोहर ।

कण कंचणसुं भरी रे लाल, जाणे [1]अलका नाम महा०, ए० ॥ ७ ॥ लोक तिहां सहु को सुखी रे लाल, साधे त्रिणे वर्ग महा० । पाले जिनवर आगन्या (आज्ञा) रे लाल, जेथी पामे स्वर्ग महा०, ए० ॥ ८ ॥ राजा राजे तिणे पुरी रे लाल, प्रजापाल इणे नाम महा० । न्याय निपुण [2]पुहवी तिलो रे लाल, रूपे जाणे [3]काम महा०, ए० ॥ ९ ॥ तास घणी अंतेउरी रे लाल, तेहमें दोइ अत्यंत महा० । रूप अधिक रलियामणी रे लाल, सोभागिणी गुणवंत महा०, ए० ॥ १० ॥ पहिली [5]सोहगं सुंदरी रे लाल, [4]सोहग तणो निधान महा० । बीजी पिण अधिकी वली रे लाल, रूपसुंदरी अभिधान महा०, ए० ॥११॥ रूपे [6]रंभा हरावती रे लाल, सुख विलसे सुकमाल महा० । बीजी 'जिन हरखे' कही रे लाल, अलबेलानी ढाल महा०, ए०॥१२॥ सर्व गाथा ३९ ॥

१ अलकापुरी नामकी देवनगरी । २पृथ्वीके तिलक तुल्य । ३ कामदेव । ४ सौभाग्य । ५ नाम की । ६ नामकी अप्सरा देवी ।

दूहा—पहिली मिथ्यात्वी कुले, अवर[1] जैन कुल जाणि । जैन शास्त्र रूपसुंदरी, भणी सुधा[2]रसवाणी ॥ १ ॥ समकित गुण निर्मल धरे, जाणे अरथ विचार । धरम थकी चूके नहीं, जो हुवे लाख प्रकार ॥ २ ॥ शिवशासन विद्या भणी, सोहगसुंदरी नार । मिथ्या मति राती रहे, चाले निज आचार ॥ ३ ॥ सोकि[3] पणे बे सुंदरी, पिण अत्यंत सनेह । आप आपणा धर्मसुं, रंगे राती जेह ॥ ४ ॥ प्रीति परस्पर अतिघणी, एक जीव तनु[4] दोइ । पिण निज निज मतने विषे, विसंवाद नित होइ ॥ ५ ॥

ढाल ३ जी. "धन धन संप्रति राजा साचो" एहनी अथवा "सेत्रुंजे साधु अनंता सीधा" एहनी— जोवो दृष्टिराग[5] अति गिरुओ, छूटे दोहिलो एह रे । दृष्टिराग राता नर नारी, किमहि न समझे तेह रे, जोवो० ॥१॥ दृष्टिराग करी सोहगसुंदरी, उत्थापे

१ वीजी । २ अमृत । ३ एकही पतिकी दो स्त्रियां, जिसको शोक कहते हैं । ४ शरीर । ५ स्वमतका राग—प्रेमबधन ।

जिनधर्म रे । मलिन कुचेल नहीं पवित्राई, स्युं ते त्रोडे कर्म रे, जोवो० ॥ २ ॥ रूपसुंदरी कहे सांभलि वाहिनी !, कसिये कंचण जेम रे । कीजे धर्म परीक्षा करीने, आल[2] न जपीये[3] एम रे, जोवो० ॥ ३ ॥ धरम धरम सहु कोई भाषे, पिण अंतर असमान रे । साकर लूण सरीखा दीसे, काच पाँच[4] समवान रे, जोवो० ॥ ४ ॥ सूरज खजूये जिवडो अंतर, अंतर राजा रंक रे। अरकँ[5] दूध गोदूधे अंतर, अंतर सुख आतंक[6] रे, जोवो० ॥ ५ ॥ चंदन आक धत्तूरे अंतर, अंतर विष पीयूषँ[7] रे । जैन धर्म (समो नहीं कोई) मोटो जगमांहे, जेहथी जाये दूष रे, जोवो० ॥ ६ ॥ धरम अनेक अछे जगमांहे, पिण ते हिंसा मूल रे, धरम जैन अधिको जोवंतां, जीवदया अनुकूल रे, जोवो० ॥ ७ ॥ एक धरमथी शिव[8] सुख लहीये, दहीये कर्म कठोर रे । एक थकी

१ खराब (मलिन) वस्त्र । २ झूटा कलङ्क । ३ बोलना । ४ मणि । ५ आकका दूध । ६ कष्ट दुःख । ७ अमृत । ८ मोक्ष

पिंड पापे भराये, लहीये नरक अघोर रे, जोवो० ॥ ८ ॥ धरमतणी चरचा मांहोमांहे,
करे अहोनिसि[2] एम रे। प्रीति रीतिसुं वे बे सुंदरी, पाले पूरो प्रेम रे, जोवो० ॥ ९ ॥
सुखे समाधे इणपरि रहती, धरती पिउसुं[3] रंग रे। विषयतणा सुख विलसे[4] बहुपरि,
दिनदिन अति उछरंग रे, जोवो० ॥ १० ॥ काल न जाणे किमही जातो, पिंड प्रिया
इक राग रे। कहे 'जिनहर्ष' ढाल ए त्रीजी, गावो आस्या राग रे, जोवो० ॥ ११ ॥

दूहा—सुख विलसंती बे जणी, जनमी पुत्री दोइ। राय करे उच्छव घणो, हीयडे हर-
षित होइ ॥ १ ॥ राणी सोहगसुंदरी, दरीभरी गुणप्रेम। तासु सुता सुरसुंदरी,
नाम बुलावी तेम ॥ २ ॥ रूपसुंदरी बीजी प्रिया, तेहनी पुत्री जेह। मयणासुंदरी
तेहनो, नाम ठव्यो गुणगेह ॥ ३ ॥ पांच धाइ पालीजतां, करतां ख्याल विनोद।

---

१ शरीरमें रहा आत्मा। २ रात दिन। ३ पतिसे। ४ भोगवते हैं। ५ उल्लसित मनसे। ६ स्त्रीभर्तार। ७ गुणगुफा। ८ प्रेमपोषक।

वरस पांचनी ते थई, दीठां परम प्रमोद ॥ ४ ॥ भणिवा सारिखी थई, बुद्धितणो भंडार। मातपिता देखी करी, इणपरि करे विचार ॥ ५ ॥

ढाल ४ थी "हरीया! मन लागो" एहनी, कन्या दोइ भणावीये, भणिवा अवसर एह रे, दोइ कन्या (भणावीये) भणे। बालपणे सहु आवडे, नाण विन्नाण अछेह रे, दो० ॥१॥ सुभदिन सुभ मुहूरत घडी, भणिवा ठवी वे बाल रे, दो०। सुरसुंदरी सिवभूतिने, मयणा सुबुद्धि नीसाल रे, दो० ॥ २ ॥ प्रथम सुता पंडित कन्हे, भणे सदा चित लाइ रे, दो०। गणित लिखित लक्षण[1] कला, तर्क[2] साहित्य[3] सहाइ रे, दो० ॥ ३ ॥ ज्योति(ष)क वैद्यक सहु भण्या, भरह[4] संगीत पुराण[5] रे, दो०। मंत्र जंत्र जडी ओषधी, थई सिवसास्त्रनी जाण रे, दो० ॥ ४ ॥ रागरंगे सहु रीझवे, गावे वीण वजाइ रे, दो०।

१ शरीरमें रहे चक्र आदि। २ न्यायशास्त्र। ३ काव्यशास्त्र। ४ भरत नामका नाटक ग्रंथ। ५ अढारे पुराण शास्त्र।

रसीयाना मन मोहती, दीठी आवे दाइ रे, दो० ॥ ५ ॥ जोवन रूपे आगली, अणीयाला दोइ नैण रे, दो० । मुखडे जीत्यो चंद्रमा, श्रवे सुधारस वैण रे, दो० ॥ ६ ॥ रूप अधिक सोहे वली, चतुराई गुणमेलि रे, दो० । सोवन मुद्रा मणि जडी, दूधे साकर भेलि रे, दो० ॥ ७ ॥ भणी गुणी चोसठ कला, अपछरने अणुहार रे, दो० । पहिले गुण-ठाणे थई, गुरु संगति सुविचार रे, दो० ॥ ८ ॥ मिथ्यात्वी सिरसेहरो, सिवभूति पंडित तेह रे, दो० । शिष्यणी पिण सुरसुंदरी, तेहवी कीधी तेह रे, दो० ॥ ९ ॥ मिथ्यामत थापे घणुं, तत्त्वथकी विपरीत रे, दो० । काने पिण न गमे सुण्यो, जैनधर्म सुं प्रीत रे, दो० ॥ १० ॥ हवे बीजी कन्यातणो, सुणो पठन अधिकार रे, दो० । शास्त्र भण्या जिनमततणा, आगम अरथ विचार रे, दो० ॥ ११ ॥ चोसठ महिलानी कला, जाणे गुरु सुपसाय रे, दो० । अवसरे धर्म करे वली, प्रणमे जिनवर पाय रे, दो० ॥ १२ ॥

॥ ११ ॥

जैन भाव सघला लहे, निश्चयने विवहार रे, दो० । कहे 'जिनहर्ष' चोथी थई, ढाल इणे अधिकार रे, दो० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ६९ ॥

दूहा—जिनमत धर अध्यापके, कुमरी भणावी जेह । मिथ्यामत राचे नही, धरम रंगाणी देह ॥१॥ एकज सत्ता दुविध नय, काल त्रिण गति च्यार। अस्तिकाय पांचे छए, द्रव्य सात नय धार ॥ २ ॥ आठ करम नव तत्त्व तिम, दसविध मुनिवर धर्म । पडिम इग्यारस बार व्रत, जाणे एहवा मर्म॥ ३ ॥ मूलुत्तर कम्मपयडि, इगसो अट्ठावन्न । कर्म-वंधना हेतु पिण, जाणे सत्तावन्न ॥ ४ ॥ बंध उदय उदीरणा, सत्ता जाणे तेह । सुहुम विचार सवे लहे, प्रवचन भाख्या जेह ॥ ५ ॥

ढाल ५ मी. "इडर आंवा आंवली रे"एहनी—सुंदरि ए सुरसुंदरी रे, जोवन पहूंती जोर । भणी गुणी सगली कला रे, चतुरपणे चित्त चोर ॥ १ ॥ सुगुणनर ! जोवो

श्रीपाल राजाका रास





अभ्यतर सभामें बेठा हुआ राजा प्रजापाल अपनी दोनों राजपुत्रीयोंके विद्याभ्यासकी परीक्षा ले रहा है।



(पत्राक १३)

पुण्यविशेष, पुण्ये लहीये रिद्धि अशेप, पुण्ये लहीये प्रभुता पेखि, वारू पुण्यतणा फल देखी, सु० ॥ २ ॥ रूपवंत गुण लवणिमा रे, विद्या प्रभुता सार । मदना कारण छे सहू रे, पिण मद न करे लिगार, सु० ॥ ३ ॥ इक दिन अभ्यंतर सभा रे, वेठो राय उल्लास । बोलावी वे निज सुता रे, साथे पाठक तास, सु० ॥ ४ ॥ विनयवती निज तातने रे, आवी कीधी सलाम । चकित थई सगली सभा रे, रूप निरखी अभिराम, सु० ॥ ५ ॥ खोले वेसारी सुता रे, राजा धरिय विवेक । बुद्धि परीक्षा कारणे रे, दीधी समस्या एक, सु० ॥ ६ ॥ राइ कह्यो पद छेहलो रे, "पुण्ये लहीये एह" । गुणवंती सुरसुंदरी रे, बोली ततखिण तेह, सु० ॥ ७ ॥ धन यौवन डाहापणो रे, रोगरहित निज देह । मनवल्लभ मेलावडो रे, "पुण्ये लहीये एह", सु० ॥ ८ ॥ रलियायत राजा थयो रे, सांभलि तास वचन । कुमरी अध्यापक भणी रे, लाख गमे दीधो धन, सु०

॥ ९ ॥ लोक खुस्याल सहू थया रे, रंज्या राणी भूप। सहु को लोक कहे इसूं रे, एतो सरसति रूप, सु० ॥ १० ॥ तुझे पिण मयणासुंदरी ! रे, समस्या पूरो एह। अनुमत्ति लहि निज तातनीं रे, कहे कुमरी गुणगेह, सु० ॥ ११ ॥ विनय विवेक प्रसन्नता रे, सीलसुं निर्मल देह। शिवपदनो मेलावडो रे, "पुण्ये लहीये एह", सु० ॥ १२ ॥ मात पिता हरषित थया रे, हरख्या लोक न जात। प्राये मिथ्यात्वी भणी रे, न गमे उत्तम वात, सु० ॥ १३ ॥ उत्तमने उत्तम गमे रे, नीचने नीच सुहाइ। ढाल थई ए पांचमी रे, कहे 'जिनहर्ष' बनाइ, सु० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ८८ ॥

दूहा—कुमरीनी इणपरि करी, बुद्धि परीक्षा राय। आगलि जे थाये हिवे, ते सुणज्यो चितलाय ॥ १ ॥ कुरुजंगल देसे अछे, संखपुरी इण नाम। नगरी तेहनो राजवी, दमितारि अभिराम ॥ २ ॥ उज्जेणी राजातणी, नितप्रति सारे सेव। निज बदले एकण

वरस, मूंक्यो अंगज हेव ॥ ३ ॥ नाम तास छे अरिदमन, अरि दमि कीधा जेर । जाणे सूरति कामनी, नारि रहे नित घेर ॥ ४ ॥ भमरो केतकि गंधसुं, मांडि रहे जिम मोह । तिम सुख पामे नारियां, कुमर निहाली सोह ॥ ५ ॥

ढाल ६ ठी. "मुजरो मानो हे जालम जाटणी" ए जाटणीना गीतनी–मदन मनोहर कुमर कलानिलो, देखी जोवन वय सुकमाल, कुमरी मोही हो कुमर सुजाणसुं। सुरसुंदरी मुख पंकज भाल, नयणे जोवे हो फिर फिर कुमरने, पामे सुख मुख तास निहाल, कु० ॥ १ ॥ दीठां हीयडो हेजे ऊलसे, दीठां पाखे अंदोह, कु० । एतो अणखाधे पाणी रसो, एहवो पापीरे मोह, कु० ॥ २ ॥ ढांक्यो न रहे किम ही नेहलो, जो करे कोडि उपाय, कु० । आग छिपाई घास पलालमें, परगट ते खिणमांहे थाय, कु० ॥ ३ ॥ चोवा चंदन कुसुमनी वासना, छानी धरीये छिपाय, कु० । तो हि खिणमांहे परगट हुवे, तिम ए नेह

दिखाय, कु० ॥ ४ ॥ बापे जाण्यो नेह सुतातणो, पुत्री! सांभल तूं सुविचार, कु० । जे मन माने जेहसुं प्रीतडी, ते परणावूं भरतार, कु० ॥ ५ ॥ हीयडे हरखी कुमरी इम कहे, लोक तणी तजि लाज, कु० । वांछयो वर पामुं तो एहने, परणावो महाराज!, कु० ॥ ६ ॥ अथवा तुह्मे मुझने परणावसो, माहरे तेह प्रमाण, कु० । बाप दीयो वर कन्या वरे, ते सुकुलीणी सुजाण, कु० ॥ ७ ॥ तुमथी लहीये वंछित बापजी!, तुमथी सुख लहीये श्रीकार, कु० । पोतानी जाणी सुखिणी करो, तुह्मे माहरे किरतार, कु० ॥ ८ ॥ इण वचने राजा तूठो कहे, जाणी अंतरभाव, कु० । ए अरिदमन कुमर पुत्री! वरो, जुगतो सरल सभाव, कु० ॥ ९ ॥ सहु कोने मन मानी वातडी, भलो कह्यो महाराय, कु० । सरीसा सरीसी ए जोडी मिली, आवी सहु कोने दाय, कु० ॥ १० ॥ लोक सहु को राजाने कहे, होस्ये इहां रंगरोल, कु० । एह जमाई सोभे तुह्म घरे, जिम मुख सोभे

तंबोल, कु० ॥ ११ ॥ राजा पिण रलीयायत थई करी, कीधो वचन प्रमाण, कु० । छट्ठी ढाल सगाइ नृप करी, कहे 'जिनहर्ष' सुजाण, कु० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ १०५ ॥

दूहा—हिवे मयणाने पूछीयो, पिण बोले नहीं तेह । नीची दृष्टि निहालती, मुखडे लाज करेह ॥ १ ॥ पुनरपि राजा पूछीयो, पुत्री ! मुझने भाष । ताहरा मनमांहे हुवे, वरनी जे अभिलाष ॥ २ ॥ वार वार इम पूछतां, कुमरी थई सलाज । मुख मुलकी कहे तातने, पूछणसुं स्यो काज ? ॥ ३ ॥ चतुर विचक्षण छो तुम्हे, जाणो छो सहु नीति । कुलकन्याने पूछीये, एह नहीं जुगती रीति ॥ ४ ॥ कुलवंती कहो किम कहे ?, मुझ परणावो एह । मात पिता जेहने दीये, तेहिज वरसुं नेह ॥ ५ ॥ निश्चयसुं जो जोईये, ते पिण वाह्य निमित्त । सुख दुख पामे प्राणीयो, निज निज पूरवक्रित्त ॥ ६ ॥

ढाल ७ मी. "मया मोहि दिखणी आणि मिलाइ" एहनी—मयणा कहे सुणो तातजी !

रे, पूरव लिखित प्रमाण । ते सबलो आवी मिले, होजी केहो इहां विन्नाण ? ॥ १ ॥
पिताजी !, कर्म सबल जगमांहि, कर्म करे तेहिज हुवे, होजी सुख दुख अरति उच्छाहि,
पि० ॥ २ ॥ जिण वेलाये जेहवा रे, जीवे कीधा कर्म । उदय थया तिण अवसरे, होजी
लहीये फलनो मर्म, पि० ॥ ३ ॥ रंक फेडी राजा करे रे, राजा फेडी रंक । एहवो कुण ?
फेडी सके, होजी कर्म लिख्या जे अंक, पि० ॥ ४ ॥ राय कहे पुत्री ! सुणो रे, तुं मुझ
प्राण आधार । वार वार तुझने कहूं, होजी मांगो वंछित भरतार ॥ ५ ॥ सुताजी !, हुं
सबलो जगमाहि, मुझ तूठे सहु संपजे, होजी सुख दुख अरति उच्छाहि, सु० ॥ ६ ॥
माहरी आस्या सहु करे रे, निबलाने बलवंत । हूं तूठो दालिद्र गमूं, होजी रूठो जाणि
कृतंत, सु० ॥ ७ ॥ रंक प्रते राजा करूं रे, राय भणी करुं रंक । सबला ते पिण माहरी,
होजी माने मनमां संक, सु० ॥ ८ ॥ करण मते ते हूं करूं रे, सुख दुख माहरे हाथ ।

रूठो जमघर मोकलुं, होजी तूठो करुं नरनाथ, सु० ॥ ९ ॥ वलतूं मयणा वीनवे रे, तात! सुणो मुझ वत्त । तुमने पिण करमे किया, होजी राजन! राज निमित्त, पि० ॥ १० ॥ जेहने पोते पुन्य छे रे, तेहने तूसे राय । पुन्य विना तूसे नहीं, होजी जो करे लाख उपाय, पि० ॥ ११ ॥ छोरू पिण मोटा तणा रे, सुखीया दुखीया होइ । कारण छे सहु कर्मनो, होजी गरव म करज्यो कोइ, पि० ॥ १२ ॥ थाप्यो कुमरी कर्मने रे, उत्थाप्यो नृप वेण । रीसवसे थयो आकरो, होजी कीधा राता नैण, पि० ॥ १३ ॥ गरव करे खोटो जिके रे, तेहमें किसो सवाद? । ढाल थई ए सातमी, होजी 'जिन हरष' सुता नृप वाद, पि० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ १२५ ॥

दूहा—रीसाणो नृप इम कहे, रे रे मूढ गमार! । तूं लीला सुख भोगवे, ते सहू मुझ उपगार ॥ १ ॥ पहिरे कंचण आभरण, नव नव वेस बणाय । खाणा पीणा खेलणा,

ते सहू मुझ पसाय ॥ २ ॥ मयणा कहे सुणो तातजी !, हूं तुम्ह कुल उत्पन्न । में पामी सुख साहिबी, ते मुझ पोते पुन्न ॥ ३ ॥ मयणा इणिपरि भाषतां, राजा थयो कृतंत । जिम पावक घृत सींचीयो, वाधे झाल अत्यंत ॥ ४ ॥ भाग्यहीण ए दीकरी, दीसे छे परतक्ष । कह्यो न माने माहरो, लीयो न मेल्हे पक्ष ॥ ५ ॥ क्रोध वसे थयो रातडो, धमधमीयो नरनाह । सगपण वेटी वापनो, भागो मन उच्छाह ॥ ६ ॥

ढाल ८ मी. नायकानी–मयणा कहे सुणो तातजी ! रे, इवडी म करो रीस मोरा तातजी ! रे, । जाण तुम्हे सहु वातनारे लाल, तुम्हे मोटा अवनीस मो०, मयणा० ॥ १ ॥ फोगट गरव न कीजीये रे, गरवे सहु गुण जाइ मो० । इंद्र नरेंद्र पिण गर्वथीरे लाल, लघुता पणो लहाइ मो०, म० ॥ २ ॥ तुम्हे कहो जे हूं करूं रे, सुखीया दुखीया लोक मो० । करता हरता हूं सहीरे लाल, ते तो इमही फोक मो०, म० ॥ ३ ॥ तुम्ह सेवाथी

जो हुवे रे, सुखीया सहु जगमांहि मो०। तुझ सेवा करता नथीरे लाल, ते तो सुखीया काहि ? मो०, म० ॥ ४ ॥ राय कहे रूठो थको रे, तूं निरधन वर जोगरे दुहागिणि!। ए मतिसारू नवि मिलेरे लाल, तुझने उत्तम भोगरे दु० ॥ ५ ॥ मयणा! सुण मुझ वातडी रे, ताहरे पोते पापरे दु० । तो सूझे तुझ एहवूंरे लाल, पामिस बहु संतापरे दु०, म० ॥ ६ ॥ हठमाती पोतातणे रे, जाणे हूं बुद्धिवंतरे दु०। समझावी समझे नहींरे लाल, अवगुण एह महंतरे दु०, म० ॥ ७ ॥ राती निज गुण ज्ञानमें रे, मूरख निगुण निटोलरे दु० । लेखवती केहने नथीरे लाल, मूढ न जाणे बोलरे दु०, म० ॥ ८ ॥ हूं जाणूं सुखिणी करूं रे, परणावूं वर साररे दु०। पिण माहरो न करे कह्योरे लाल, थाइस दुःख भंडाररे दु०, म० ॥ ९ ॥ मयणा कहे तुझने रुचे रे, ते परणावो नाह मोरा तातजी! रे । मुझ पोते पुन्य जो हुस्येरे लाल, तो मुझ होस्ये उच्छाह मो०, म० ॥ १० ॥ गाढेरो

रीसावीयो रे, सांभल(संभलावी) एहवा बोलरे दु० । मोटा बोली दीकरीरे लाल, मुझ लेखव्यो तृण तोलरे दु०, म०॥११॥मुझने इणे उत्थापीयो रे, थाप्यो वखत सहायरे दु० । कहे 'जिनहरष' सहू सुणोरे लाल, आठमी ढाल कहायरे दु०, म०॥१२॥ सर्व गाथा १४३ ।

दूहा—रोषातुर नृप देखिने, मंत्री चिंते एम । ठारूं वयण सुधारसे, सीतल थाये जेम ॥ १ ॥ महाराय! रयवाडीये, रमवानो छे लाग । जईये रमवा आज प्रभु!, फूल रह्यो छे बाग ॥ २ ॥ अंतरगत दाझी रह्यो, क्रोधागनि विकराल । उठ्यो तुरत उतावलो, मानि वचन भूपाल ॥ ३ ॥ चरवादार प्रते कहे, करो तुरंग तइयार । हुकम सुणी आण्यो तुरी, सपलाणो तिणवार ॥ ४ ॥ चतुरंगसेना परिवर्यो, राय थयो असवार । हिवे आगलि जे नीपजे, ते सुणज्यो अधिकार ॥ ५ ॥

ढाल ९ मी. "रे हमीरीयारे रहि वेरी नेण झकोलतो"एहनी—राय रयवाडी संचर्यो,

आगलि उडे खेह मंत्रीसर!। राजा चकित थई कहे, आवे छे कुण एह मं०, रा० ॥ १ ॥
आडंबर करता थका, न धरे किसि प्रवाह मं०। कोलाहल हलबोलसुं, मंत्री कहे सुणि नाह!
राजेसर!, रा० ॥ २ ॥ ए पेडो कोढी तणो, सात सयां परिवार राजेसर! । कोढी
सहु भेला थया, व्याप्यो रोग अपार रा०, रा० ॥ ३ ॥ राजकुंवर एक नान्हडो, आवी
मिलीयो मा(य)हि रा०। ते पिण कोढी फरसथी, उंबर रोग लहाय रा०, रा० ॥ ४ ॥ उंबर
रोग थकी थयो, उंबर राणो नाम रा०। ते आवे छे ए चल्यो, ए असमाधिनो ठाम
रा०, रा० ॥ ५ ॥ असवारी वेसर तणी, परिवरीयो परिवार रा०। गतनासा चामर धरे,
गलित त्वचा छत्रधार रा०, रा० ॥ ६ ॥ घंटा हाथे झालिने, मुहर चले गत कर्ण रा०।
लोकांने बीहावतो, भूंडो जेहनो वर्ण रा०, रा० ॥ ७ ॥ कोढ मंडल अंग ओलगू,
गलितांगुलि मंत्रीस रा०। सर्व गलित कोटवालछे, तेहमें उंबर ईस रा०, रा० ॥ ८ ॥

द्रादमंडल कोढे गल्या, दीसंता विकराल रा० । सेवक तास दोहागीया, राध रुधिर परनाल रा०, रा० । ९ । देसाधिप पासे लीये, मननो मान्यो माल रा० । ना कोई न कही सके, एहवी एहनी चाल रा०, रा० ॥ १० ॥ तेह भणी वीजी दिसे, चालो श्रीमहाराय! रा० । जावा द्यो ए कोढीया, जिम दरिसण नवि थाय रा०,रा० ॥ ११ वीजी दिसि राजा चल्यो, मारग छोडी जाम रा० । कोढीवृंदे निरखीयो, हूकल करता ताम रा०, रा० ॥ १२ ॥ आव्या ते उतावला, नृप साम्हा तिणवार रा० । तब राजा एहवूं कहे, सुण मंत्री ! सुविचार मं०, रा० ॥ १३ ॥ परचावो पासे जई, मुह मांग्यो द्यो माल मं० । पिण दूरे रहाविज्यो, करिज्यो मुख त्र्यालमपाल मं०, रा० ॥ १४ ॥ हुकम दीयो मुहुताभणी, वीहंते भूपाल मं० । कहे 'जिनहरष' पूरी थई, नवमी ढाल रसाल मं०, रा० ॥ १५ ॥

दूहा—गलितांगुलि उतावलो, उंवरनो परधान । ते पहिली आवी कहे, सांभल हो

राजान ! ॥ १ ॥ उंवरराणो अम्हतणो, साहिब छे सुपराण । माने सहु को तेहने, कोई न लोपे आण ॥२॥ मणि माणिक कंचण रयण, भोजन कूर कपूर । उंवर राणो हुकमसुं, मंगावे भरपूर ॥ ३ ॥ अम्हे सहू सेवक नफर, सुखीया तास पसाय । कमी नहीं किण वातनी, पिण साभल महाराय ! ॥ ४ ॥ राणी नहीं राजातणे, ए छे मोटी खोड । इक कन्या द्यो अमभणी, जिम पहुंचे मन कोड ॥ ५ ॥

ढाल १० मी. "वात म काढो हो व्रततणी" एहनी– राय कहे किम दीजिये, निज कन्या गुणवंतो रे । रोगी नरने आपतां, जगमें अपजस लहंतो रे, रा० ॥ १ ॥ वलतुं गलितांगुलि कहे, ताहरो जस जग गाजे रे । मांग्यो दे मालव धणी, एह बिरुद तुझ छाजे रे, रा०॥२॥ के तो कीरति हारीये, के दीजे निज कन्या रे । जेहवी तेहवी अम्हभणी, मानीस्ये ते धन्या रे, रा०॥३॥ पडीयो राय विचारणा, अजुगति वात सुणाई रे । किमही दुरस पडे

नहीं, दोतड पडीयो भाई रे, रा० ॥ ४ ॥ नृपने मयणा सांभरी, कन्या ए वर जोगी रे। अविनयनो फल जिम लहे, थाये दुखिणी रोगी रे, रा० ॥ ५ ॥ कीरति कहो किम हारीये, दोहिली जे जगमाहे रे। कन्या देतां जस रहे, तो जस गमीये काहे रे, रा० ॥ ६ ॥ मुझ मंदिर तुम्हे आवज्यो, इम कही पाछो वलीयो रे। राय गृहांगण आवीयो, सासीनो हलफलीयो रे, रा० ॥ ७ ॥ तेडी मयणा सुंदरी, राय कहे सुण बेटी ! रे। हूं तुझने सुख चिंतवूं, तूं अवगुणनी पेटी रे, रा० ॥ ८ ॥ बाप सुकरमी जो हुवे, वंछित वर परणावूं रे। हठ परिहर सठ बालिका !, दोहग दूरे गमावूं रे, रा० ॥ ९ ॥ जो आपकरमी तूं हुवे. तो वर उंबर राणो रे। तुझ करमे ए आणीयो, परणेवानो टाणो रे, रा० ॥ १० ॥ मयणा मुलकीने कहे, वखत लिख्यो वरराजो रे। ते मुझ सिरनो सेहरो, माहरे तेहसुं काजो रे, रा० ॥ ११ ॥ राये ते तेडावीयो, सपरिवारसुं आयो रे। करमसंयोगे नृप कहे, तूं वर मयणा पायो रे,

रा० ॥ १२ ॥ उंबर कहे ए राजवी !, वात न जुगती दीसे रे । दसमी ढाल पूरी थई, कहे 'जिनहरष' जगीसे रे, रा० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ १८१ ॥

दूहा—वायस कंठे कनकनी, जिम सोभे नहीं माल । जोडी नहीं बग हंसली, तिम मुझने ए बाल ॥१॥ राय कहे ए दीकरी, कह्यो न माने मुझ । आप करम माने सही, तिण आपूं छूं तुझ ॥२॥ मुझ दीधो वर आदरे, तो परणावूं जोय । करम मांहि तूंहिज लिख्यो, मुझने दोस न कोय ॥ ३ ॥ दया न आणी चित्तमें, नाण्यो नेह लिगार । लोक कहे ए स्यूं थयो, करे अधम आचार ॥ ४ ॥ उत्तम कोप करे नहीं, करे ते मान प्रमाण । पिण ए जुगतूं नवि करे, कोपे चढ्यो अयाण ॥ ५ ॥

ढाल ११मी. वांगरीयानी—उंबर कहे सुण राजवी ! रे, माहरी ए नहीं जोडि रे गुणवंता ! । हूं कोढी रोगे भर्यो रे, रतन लगाडूं खोडि रे गु० ॥ १ ॥ मुझ सोभे नहीं ए कांता, में पातक

कीया अनंता गु० । मुझ देखी सहू वीहंता, तिण एहनो नहीं मुझ कोडरे गु० ॥ २ ॥ जो मुझने देवा करे रे, तो कोई मुझ जोगरे गु० । जेहवी तेहवी आपीये रे, हसे नहीं जिम लोगरे गु०॥३॥ ए कन्या ने हूं किहां रे, ए हंसी हूं कागरे गु० । सरिखे सरिखो जो मिले रे, तो सोभे महाभाग रे गु० ॥ ४ ॥ अविचार्युं जो कीजिये रे, लोक हसे घर हाणि रे गु० । तुमने एहवूं नवि घटे रे, अपजसनी ए खाणि रे गु० ॥ ५ ॥ तूं द्ये पिण हूं ल्यूं नहीं रे, थाओ तुझ कल्याण रे गु० । बीजी ठामे मांगस्यूं रे, उंबरनी ए वाण रे गु० ॥६॥ राय कहे हूं स्यूं करूं रे, एहनो एहवो भाग रे गु० । वाक न को तुझ मुझ तणो रे, ए कन्या तुझ लाग रे गु० ॥ ७ ॥ मयणा निसुणी एहवूं रे, ऊठी तुरत तिवार रे गु० । ए वर लिखीयो भागमें रे, तो हिवे किसो विचार रे गु० ॥ ८ ॥ उंबर कर निज कर ग्रह्यो रे, मयणा धरीय विवेक रे गु० । कोढी वर पिण आदर्यो रे, छोडी नहीं निज टेक रे गु०॥९॥

ऊमराउ सामंत जे रे, मंत्रीसर परधान रे गु० । अंतेउर वारे सहू रे, वले नहीं राजान रे गु० ॥ १० ॥ लोक सहू जोइ रह्या रे, दुखभर रोवे सेण रे गु० । मुखमें घाली आंगुली रे, इण परि भाषे वेण रे गु० ॥ ११ ॥ एह अजुगतूं नृप करे रे, कीडी ऊपरि घाव रे गु० । पिण कोई न कही सके रे, राजा वदे सो न्याव रे गु० ॥ १२ ॥ ए थई ढाल इग्यारमी रे, कोप्यो राय अपार रे गु० । कहे 'जिनहरष' हिवे सुणो रे, आगलि जे अधिकार रे गु०॥१३॥

दूहा–रोवंतां इणपरि सहू, कहे अधम ए भूप । रयण अमूलक कन्यका, किम नांखेछे कूप ॥ १ ॥ छोरू कुछोरू जो हुवे, तोही पहिडे नहीं मावीत । भोलपणे एहवो कह्यो, तो ही राजा चाले नीत ॥२॥ छोरू वेचे वाप जो, तो कुण आडो थाय । जोर न चाले रायसुं, सहू करे हाय हाय ॥३॥ दुर्लभ दरसण देखतां, मयणा मोहन वेलि । आंबा एरंड पाखति, रोपे छे गुणगेलि ॥४॥ सगले कीधी वीनती, सहू कह्यो समझाय । कहणा मांहे केहनी, वाकी न रही कांय ॥५॥

ढाल १२ मी. "सुगुण सनेही मेरे लाला !" एहनी–मयणा निजमन काठो कीधो, जो मुझ वखते ए वर दीधो । तो माहरे ए उंवर राणो, इण भव एहिज प्रीतम जाणो ॥ १ ॥ इहा कोईनो नहीं छे चारो, वांक न कोई इहां (अछे) पितारो । दाय उपाय अनेक विचारो, करम सवल जगमांहि अ(व)तारो ॥ २ ॥ मन दृढ देखी कुमरी केरो, राय वल्यो मनमांहि घणेरो । सती शिरोमणि सत्त्व न चूके, लीधो पख सापुरस न मूंके ॥३॥ सायर मरजादा जो लोपे, क्षमावंत मुनिवर जो कोपे । शेपनाग मुख जो विप उलटे, तो पिण उत्तम वयण न पलटे ॥४॥ पवन डुलायो मेरु न डोले, मोटा दीन वचन नवि वोले । आपद संपद मांहि सरीखा, ते नर वावन वीर सरीखा ॥ ५ ॥ करमायत्त सहू ए दीसे, कुमरी निजमन माहे हींसे । एहवुं देखी राय परणावी, उंवर राणाने मन भावी ॥ ६ ॥ उंवर कुमरी वेसर चडीया, निज डेराने पंथे ख(प)डीया । नगर लोक सहू ऊभा जोवे, करे कोलाहल डसके

रोवे ॥ ७ ॥ एक कहे धिग धिग ए राजा, एहना खोटा थया दिवाजा । कोई कहे ए कुमरी अयाण, राय वचन न कियो परमाण ॥ ८ ॥ कोई कहे मा भूंडी कीधी, निजकन्याने सीख न दीधी । केई पाठक अवगुण काढे, जिनमतने केई दूषण चाढे ॥ ९ ॥ मयणा चाली उंवर संगे, हीयडे हरख धरी उछरंगे । जैन धरम मींजी भेदाणी, किम पलटे तेहनी कहो वाणी ॥ १० ॥ बारमी ढाल थई ए जाणो, कुमरी परण्यो उंवर राणो । करमतणी 'जिनहरष !' कहाणी, ज्ञानी विण नवि जाये जाणी ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ २१९ ॥

दूहा–हिवे बीजी कन्या तणो, जोडेवा वीवाह । तेडावी सिवभूतिने, इम भाषे नरनाह ॥ १ ॥ लगन अनोपम जोइवो, निरदूषण श्रीकार । सुरसुंदरी परणावीये, करी महोच्छव सार ॥ २ ॥ लगन शुद्ध छे अमुकदिन, एहवो लगन न कोइ । ज्योतिष शास्त्र निहालतां, एहवूं कदीक होइ ॥ ३ ॥ जोसी वचन प्रमाण करी, मांड्यो राय वीवाह । परणावूं सुरसुंदरी, अधिको करीउच्छाह ४

॥ ३१ ॥

ढाल १३ मी. "करडो तिहां कोटवाल" एहनी–प्रीति धरी मनमांहि, राय तेडाव्या हो साजन आपणा । सगा सणीजा लोक, प्रीति वधारण हो आव्या अतिघणा ॥ १ ॥ राजवीयांने साथि, आव्या हो राजकुमर रलीयामणा । अमरपुरी अवतार, नगर विराजे हो मनुष्य सुहामणा ॥२॥ डेरा तंवू ताणी, मंडप रचीया हो नव नव भांतिना । रंग मंडप रंगावि, कारण कीधा हो सगला खातिना ॥ ३ ॥ लौकिक विधि सहु कीध, तेहनो स्यूं कहीये हो लोक जाणे सहू । आव्यो लगन सुदीस, आरिम कारिम कीधा तिहां वहू ॥ ४ ॥ हिवे अरिदमणकुमार, सुंदरवागा हो अंग वणावीयो । पुरुषतणा सिणगार, कीधा हो सहुकोने मन भावीयो ॥ ५ ॥ चंचल चपल तुरंग, सोवन साकत (पलाण) हो चढीयो नचावतो । जाणे देवकुमार, मुखडे तंबोल सुरंगा चावतो ॥६॥ चवरी मंडपमांहि, कुमर आवीने हो बेठो तिण समे । बेठा सहू भूपाल, वेह वणावी कंचन कलसमे ॥७॥ सोले ही सिणगार, कुमरी

वणाया हो सुंदर मनरली । आवी चवरीमांहि, वादलमांहे हो जाणे चमकी वीजली ॥ ८ ॥ वेठी वरने पास, सोहे जाणे करि श्रीपति रुकमणी । सोभा अधिक सुहाय, जाणे इंद्राणी इंद्र कन्हे वणी॥९॥फिरीया फेरा च्यारि, च्यारे चवरीमां मंगल वरतीया । कन्या वर कंसार, मांहो माहे मिली आरोगीया॥ १० ॥वर कन्या वीवाह, करि परणाव्या हो ढोल घुरावीया । ग्डि धुं धुं धुं घुर्यारे निसाण, भेरि भुंगल वाजा वजडावीया ॥११॥ थयो सुरंग वीवाह, रंग सुरंग रह्यो वेवाहीयां। ऊभा चारणभाट, विरुदभणे मनडे ऊमाहीयां ॥१२॥ हथलेवो तिण-वार,जोसी जोडाव्यो रूडी जुगतसुं। एथई तेरमीढाल, कहे'जिनहरष'जाणज्यो विगतसुं१३

दूहा–कर मेल्हावे नृप दीया, सोवन रयण भंडार । सुंदर घोडा हाथीया, दासी दास अपार ॥ १ ॥ वहु मौलिक वागा दीया, रतन जडित सिणगार । सोवन पाए ढोलीया, सउडि(सोडि) तलाई सार ॥२॥ दीधो सवलो दायजो, कहतां नावे पार। प्रीती तिहां देतां

दूहा–मातपिता पाय लागिने, कुमरी चली पिउ साथ। हय गय पायकसूं हिवे, चोलावे नरनाथ ॥ १ ॥ ए मंदिर ए मालीया, ए नगरी आहीठाण। सुझने वीसरिस्ये नहीं, रात दिवस सुप्रमाण ॥ २॥ सीख करी सहु लोकसुं, नयणे नीर प्रवाह। हीयडो फाटे मायनो, उलट्यो विरह अथाह ॥ ३ ॥ गले लागी पुत्रीतणे, माइ करे आक्रंद। प्रेम तणे परवस थई, हे हे॥ मोह नरिंद ॥ ४॥ आंसूं कुमरी लोयणे, जलधर जिम संजोई। हत्थालि छाला पड्या, चीर निचोइ निचोइ ॥ ५ ॥ रोतां मृग रोवरावीया, वाट वटाऊ लोक । जातां जीव वहे नहीं, वीछडवानो सोक ॥ ६ ॥ कुमरी चाली सासरे, हिलिमिलि सीख करेह। फिरि फिरि जोवे पाछले, डब डब नयण भरेह ॥७॥ हिवे (मयणा) उंवर राणा तणो, सांभलज्यो अधिकार। मनमां निश्चय राखीयो, न धरे दुख्ख लिगार ॥ ८ ॥

ढाल १६मी. "विंदली तो नणद गमाई, म्हारे ल्हौड्ये देवर पाई हे नणदल विंदली ल्ये"

एहनी–उंवर कहे सुण कुमरी !, तूं तो रूपे जाणे अमरी हे सुंदर वयण सुणो । राय अजु-गति कीधी, मुझ कोढीने तूं दीधी हे सु० ॥ १ ॥ वयण सुणो मृगनयणी, मृगराजकटी ससिवयणी हे सुं० । विधिना रूप नीपायो, देखी पोते सुख पायो हे सुं० । ए जोवन तुझ नीको, सहु नारि तणे सिर टीको हे सुं० ॥ २ ॥ मुझ आणा सिर धारी, कोई पुरुष अवर सुविचारी हे सुं० । भोगवि तिणसुं भोगा, मन गमता सरस संयोगा हे सुं० ॥ ३ ॥ हुकम धणीनो होई, इस करतां दोप न कोई हे सुं० । नारि रयण तूं हीरा, हूं नरमें काच कथीरा हे सुं० ॥ ४ ॥ तूं तो उत्तम हंसी, हूं वायस जाणि कुवंसी हे सुं० । मुझ हीयडे दुख झाझूं, राय करणी देखी दाझूं हे सुं० ॥ ५ ॥ ते माटे हठ छोडी, मुझ हुकमे करि कांइ जोडी हे सुं० । मुझ पासे ते रहिस्ये, तुझसुं सुखफल भोगविस्ये हे सुं० ॥ ६ ॥ उंवरनी ए वाणी, सुणि मयणा दुखभराणी हो प्रीतम ! वयण सुणो । नयणे नीर प्रवाहा, कर जोडी कहे

सुणो नाहा ! हो प्री० ॥ ७ ॥ चरणे सीस लगावी, कहे सी ए वात सुणावी हो प्री० । मनमां जाणी रहिज्यो, फिरि बीजी वार म कहिज्यो हो प्री० ॥ ८ ॥ अधम जनम नारीनो, मेलो जाणे कुंडगारीनो हो प्री० । तजीये सील अमोलो, तो कांजी कोही तूलो हो प्री ०॥९॥ सीयल विभूषा कहीये, सीले जस महीयल लहीये हो प्री० । इणि भव प्रिय तूं मोरे, हूं चेडी सरणे तोरे हो प्री० ॥ १० ॥ काम न कोई बीजे, तुझने देखी मन रींझे हो प्री० । वाल्हेसर तूं मन माहरे, वलिहारी प्रीतम ! ताहरे हो प्री० ॥ ११ ॥ ए निश्चय मुझ जोवो, होणहार हुवे ते होवो हो प्री०। सोलमी ढाल सुहावे, 'जिनहरष' सहु सुख पावे हो प्री०॥१२॥

दूहा—सती सिरोमणि मन सुदढ, निरमल सील सुहाय । इकतारी इम राखतां, अनुक्रमे रयणि विहाय ॥ १ ॥ प्रहविहसी पूरव दिसे, उदय थयो आदीत । मानुं मयणा सुंदरी, देखवा सुपवीत ॥ २ ॥ चिहुं दिसि चिडीयां चह चही, बोल्या पंखीवृंद । मानुं मयणाने

कहे, चिरंजीव चिरनंद ॥ ३ ॥ मयणा वयण कहे हिवे, सुण प्रीतम ! सुसनेह । जईये ऊलट भावसुं, श्रीरिसहेसर गेह ॥ ४ ॥ मयणा उंबर आवीया, वांद्या रिषभ जिणंद । मयणा स्तुति इणपरि करे, हीयडे धरि आणंद ॥ ५ ॥

ढाल १७ मी. "आदर जीव ! क्षमा गुण आदर" एहनी—जय जय रिषभ जिणेसर साहिब, शिव संपत्ति दातार जी । नाम थकी नवनिधि सिद्धि लहिये, त्रिभुवन जन आधार जी, जय० ॥१॥ तूं करुणा सागर गुण आगर, महीयल महिमावंत जी । सुर नर नायक पाय नमे नित, दंसण नाण अनंत जी, जय० ॥२॥ अजर अमर अविचल अविनासी, न लहे कोई सरूप जी । ज्योतीरूप अरूपी अरिहंत, त्रिभुवन नाथ अनूप जी, जय० ॥३॥ सयंभूरमण विंदु जल-केरी, संख्या कहे कोई तास जी । तुझ गुण संख्या न लहे कोई, जो सारद मुखवास जी, जय० ॥ ४ ॥ तूं परतिख सुरतरु अवतारी, वलिहारी तुझ नाम जी । तूं सहु जंतु तणो

मल ध्यान, त० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक नवपद आगले, ठावे श्रीफल गोल। गौघृत उज्जल खंड मिश्रित करी, जेथी होइ रंगरोल, त० ॥ ३ ॥ अरिहंतपदे धवलो गोलो ठवे, कर्केतन अठ रयण। चोत्रीस हीरारे वली मांहे ठवे, वंछित संपत्ति लयण, त० ॥ ४ ॥ सिद्धपदे इकत्रीस प्रवालडा, राता माणिक अट्ठ। रक्त चंदन लेपित गोलक धरे, टले उपद्रव कष्ट, त० ॥५॥ पंच मणी गोमेद छत्रीसनो, सूरिपदे ठवे गोल। पंचवीस ठावे पाठकपदे, नील रतननीरे ओल, त० ॥ ६ ॥ रिष्ट रतन सगवीसे मुनिपदे, सतसठि एकावन्न। सित्तरने पंचास उलाससुं, मुगता सेस सुमन्न, त० ॥ ७ ॥ निज निज वरणे रे वस्त्रादिक ठवे, नवपद तणे समेलि। खाजा दोठारे नुकती लाडुआ, झाझी साकर भेलि, त० ॥८॥ खारिक खुरमारे द्राख सोपारीयां, निमजाने नालेर। इत्यादिक नव नव आगलि धरे, पामे मोटिम मेर, त० ॥९॥ इम ऊजमणुंरे मनरंगे करे, आणी भावविसाल। कहे 'जिनहरप'

लहे सिवसंपदा, ए थइ वीसमी ढाल, त० ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ३४६ ॥

दूहा–इणपरि जे ए तप करे, दुष्ट कुष्ट क्षय खास। रोग सोग दालिद्र दुख, थाये सहुनो नास ॥१॥ दोहागिण वंध्यापणुं, विसकन्यादिक दोष। स्त्रीने ए थाये नहीं, पुन्य तणुं होइ पोष ॥२॥ संघभणी गुरु उपदिस्युं, ए नर लक्षणवंत। जिनशासन दीपावस्ये, भगति करो मनखंत ॥३॥ सात खेत्र जिनवर कह्या, श्रावक पुन्य पवित्र। साते सचवाये सही, साहमी भगति विचित्र ४ इम निसुणी सहु को करे, उंबर भगति अपार। रहिवा मंदिर आपीया, धन कण कंचन सार ५

ढाल २१ मी. "सोझितरो सिकदार" एहनी–हिवे उंबर निज नारि वयण मनमां धरी हो लाल व०, सदगुरु हितउपदेस हीयामें अनुसरी हो लाल ही०। सिद्धचक्रनी पूजा सीखी गुरुसांनिधे हो लाल सी०, जाणे बुद्धिप्रमाण सुजाण भली विधे हो लाल सु० ॥ १ ॥ आव्यो आसू मास महूरत सुभ दिने हो लाल म०, सिद्धचक्रनो तप आरंभ्यो

सुभमने हो लाल आ० । तन मन वचन पवित्र करी जिनमंदिरे हो लाल क०, पूजा श्रीजिनराय अपाय दूरे करे हो लाल अ० ॥ २ ॥ सिद्धचक्रनी पूजा कि आठ प्रकारनी हो लाल कि०, मयणा उंबर दोइ करे विस्तारनी हो लाल क० । आंबिलनो पचखाण करे मन ऊमही हो लाल क०, सुगुरु वचन सुप्रमाण हीयामे गहगही हो लाल ही० ॥ ३ ॥ दिन दिन ओछो रोग हुवे इण जापथी हो लाल हु०, तूटे करम कठोर विछूटे पापथी हो लाल वि० । नवमे दिवस विसेस न्हवण पंचामृते हो लाल न्ह०, सिद्धचक्रनी पूजा रचे सुभमन हिते हो लाल र० ॥ ४ ॥ स्नात्र करी मन रंग न्हवण जल छाटीयो हो लाल न्ह०, रोग गयो ततकाल नीरोगी तनु थयो हो लाल नी० । जाणे रतिपति रूप अनूप विराजीयो हो लाल अ०, नवपद महिमा अधिक जगतमां गाजीयो हो लाल ज० ॥ ५ ॥ सिद्धचक्रने न्हवणे अवर सहु रोगीया हो लाल अ०, कंचण वरणी देह थया

नीरोगीया हो लाल थ० । मयणा पतिनो रूप निहाली इम कहे हो लाल नि०, गुरुनो ए उपगार सुजस महीयल लहे हो लाल सु० ॥ ६ ॥ उंबर देवकुमार सरूपे आगलो हो लाल स०, सहुना टलीया रोग धरम थयो ऊजलो हो लाल ध० । फलीय मनोरथ माल कुमर मयणा तणी हो लाल कु०, कीरति वाधी लोक मझार घणुं घणी हो लाल म० ॥ ७ ॥ महिमा श्रीजिनधर्म सुगुरुनो निरखीयो हो लाल सु०, देव धरम गुरु भक्ति कुमर करे हरखीयो हो लाल कु० । जिनगृहथी इक दिवस नीसर्या दंपती हो लाल नी०, साह्मी आवि नारि ओलखी सुभमती हो लाल ओ० ॥८॥ पाये लागे तास कुमर हरखेकरी हो लाल कु०, हीयडे हेज अपार सजल आंख्यां भरी हो लाल स० । मायडी पुत्र वियोगसुं वेदन उपसमी हो लाल वे०, ढाल थई 'जिनहरष' कहे इकवीसमी हो लाल क० ॥ ९ ॥ सर्व गाथा ॥ ३६० ॥

दूहा–कुमर कहे सुण मातजी!, वहु दिवसे मिलीयाह । ऊमाहो सफलो थयो, दुख-

नीरोगीया हो लाल थ० । मयणा पतिनो रूप निहाली इम कहे हो लाल नि०, गुरुनो ए उपगार सुजस महीयल लहे हो लाल सु० ॥६॥ उंबर देवकुमार सरूपे आगलो हो लाल स०, सहुना टलीया रोग धरम थयो ऊजलो हो लाल ध० । फलीय मनोरथ माल कुमर मयणा तणी हो लाल कु०, कीरति वाधी लोक मझार घणुं घणी हो लाल म० ॥७॥ महिमा श्रीजिनधर्म सुगुरुनो निरखीयो हो लाल सु०, देव धरम गुरु भक्ति कुमर करे हरखीयो हो लाल कु० । जिनगृहथी इक दिवस नीसर्या दंपती हो लाल नी०, साह्मी आवि नारि ओलखी सुभमती हो लाल ओ० ॥८॥ पाये लागे तास कुमर हरखेकरी हो लाल कु०, हीयडे हेज अपार सजल आंख्यां भरी हो लाल स० । मायडी पुत्र वियोगसुं वेदन उपसमी हो लाल वे०, ढाल थई 'जिनहरष' कहे इकवीसमी हो लाल क० ॥९॥ सर्व गाथा ॥ ३६० ॥

दूहा—कुमर कहे सुण मातजी !, वहु दिवसे मिलीयाह । ऊमाहो सफलो थयो, दुख-

दोहग टलीयाह ॥१॥ मयणा सासू जाणिने, पायपडी तिणवार। माता! तुझ वहुअर थकी, हूं नीरोग विचार ॥ २ ॥ माय कहे वहुअर सहित, जीवे कोडिवरीस । अविचल जोडी तुम्हतणी, इम दीधी आसीस ॥ ३ ॥ आलिंगन देई करी, पूछे कुसल सरीर। माता! तुझ परसादथी, हूं थयो आज सधीर ॥ ४ ॥ इतला दिवस किहां हुता?, मात! कहो मुझ वात। जणणी कहे सुत आगले, पूरवला अवदात ॥ ५ ॥

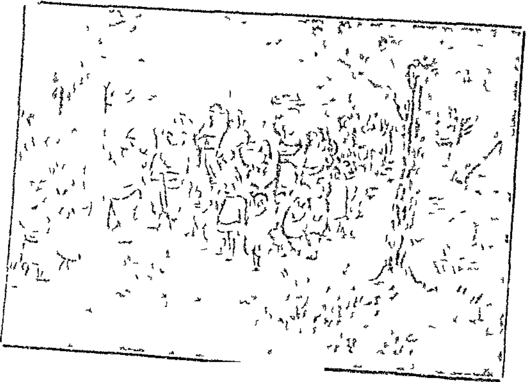
ढाल २२ मी. "ह्मांरो लाल पीये रंग छोतरा" एहनी—तुझने पूछी पुत्र! हूं चली, उज्जेणीथी कोसंबी पहूंती रे। मुनिवर दीठो एक देहरे, वांदी मनमा गहगहती रे, तु० ॥ १ ॥ में दाख्युं मुनिने एहवूं, इण नगरी वैद्यनो वासो रे । आवी पुत्र रोग पडींगणो, पूछवा तेहने पासो रे, तु० ॥२॥ भगवन! कहो पुत्र कहीये हुस्ये?, निरावाध मुनि तव भाँखे रे। तुझ सुत कोढी टोले भल्यो, निजनाथ करीने राखे रे, तु० ॥ ३ ॥ उंवर राणा नामे कर्यो, परण्यो मालवपति

वेटी रे । मयणासुंदरी नामे भली, सीलवंती गुणमणि पेटी रे, तु० ॥ ४ ॥ सदगुरु वचने दंपति, भावे सिद्धचक्र आराधे रे । कंचणवरणी काया थई, निज (जिन) धर्म भली परि साधे रे, तु० ॥ ५ ॥ उज्ञेणीमें सुखसुं रहे, इम सुणि थई हरष सनाथो रे । इहां आवी हूं मिलवा भणी, तुझने दीठो वहू साथो रे, तु० ॥ ६ ॥ सासू वहू पुत्र सुखे रहे, करता जिनधर्म उमेदे रे । इक दिन जिनवर पूजा करी, अंग अग्र भली विहुं भेदे रे, तु० ॥ ७ ॥ एहवे अवसर हिवे सांभलो, मयणासुंदरीनी माता रे । राणी रूपसुंदरी गुणभरी, नृपसुं रीसावी जाता रे, तु० ॥ ८ ॥ जई वेठी निजभाई घरे, पुन्यपाल कृपाल कहावे रे । दुख सोक घणो मनमां करे, मयणा विण खिण न सुहावे रे, तु० ॥ ९ ॥ कितलेक दिवसे दुखतजी, जिन-धर्म करे मनरंगे रे । आवी जिनवर दरसण भणी, तव देखे कुमरसुं रंगे रे, तु० ॥ १० ॥ एतो अमर कुमर रूपे भलो, फिरि फिरि ते साह्मो जोवे रे । जोतां जोतां तिण ओलखी,

रास. ॥ ५३ ॥

कारणे, करे मंत्रणा करिवा छेद रे, वे० ॥ ७ ॥ मंत्री जाणी ते वातडी, संभलावी मुझने तेह रे, वे० । मंत्रीसर कहे राणी ! सुणो, जतने राखो सुत एह रे, वे० ॥ ८ ॥ जीवस्ये तो राज्य हुस्ये वली, सुत एकज ए दही दूध रे, वे० । तिण कारणि ए लेई करी, जाओ तुम्हे आस्था लूध रे, वे० ॥ ९ ॥ केडेथी अम्हे पिण जाइस्यूं, नाठां विण कुसल न होइ रे वे० । मंत्रीना वयण सुणी इसा, नाठा हूं ने सुत दोइ रे, वे० ॥ १० ॥ एकलडी हूं राते चली, छानी नवि जाणी केण रे, वे० । नंदन कडीए पंथ चालवुं, कांटा भागे पाएण रे वे० ॥ ११ ॥ धरती ऊंची नीची घणुं, अथडाउं तनु सुकमाल रे, वे० । दुख एक हतो पति मरणनो, राज्यभ्रष्ट थया सुत बालरे, वे० ॥ १२ ॥ वयरीनो भय मनमां घणो, इम चलतां रात विहाइ रे, वे० । एतले थई ढाल चोवीसमी, 'जिनहरष' कही चितलाइ रे, वे० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ४०९ ॥

दूहा—दुखभर इणपरि चालतां, नीठ थयो परभात । कोढीनो टोलो सबल, आगलि एक दिखात



अजितसेनकी तरफसे होनेहार भयके कारण पांच वर्षके राजपुत्र श्रीपालको लेकर रानी कमलप्रभा गुप्त रीतीसे राजमहलसे निकली, रात भर जंगलमें फिरती हुई सबेरे रस्ते पर गई वे सामने ७०० कोढीये मिले उन्होंने प्रेमपूर्वक हकीकत पूछकर आश्वासन दिया एवं अजितसेनके भयसे बचानेके लिये माता और पुत्रको अपने समुदायमें मिला लिये और श्रीपालको एक खच्चर पर चढा दिये, पीछेसे आये हुए राजपुरुषोंको कोढिये समझा रहे हैं।

(पत्रांक ७०)

॥१॥कमला ते देखी करी, मनमां थइ भयभ्रांत। कडीए बालक एकली, न लहे चित्त निरांत
॥२॥रोवे जोवे दह दिसे, कोढी करुणावंत। दुखिणी देखी मुझभणी, पूछे सहु वृतंत ॥३॥
ए बंधव सहु ताहरा, तूं अम्ह बहिन सरीख। पूछी वात कही सहू, आपी रूडी सीख ४

ढाल २५ मी. देशी मांनां दरजणरी–देइ इम आसासना रे, निरभय कीधी जाम। वर
वेसर वेसारिने,ओढाडी चादर ताम रे॥१॥ सांभलज्यो आगे वात रे,जिम मीठी लागे, भागे रे
भागे मनना दुख, दोहग भागे, ए आंकणी, इण अवसर केडे थकी रे, आव्या अरि असवार।
रोस भर्या आयुध धर्या रे, मुख बोलंता मार मार रे, सांभल० ॥ २ ॥ पेडाने आवी कहे रे,
तुम्हे दीठी इक नार। पासे सुंदर दीकरो, रूपे रतिपति अवतार रे, सांभल० ॥ ३ ॥ पेडो कहे
तुम्हे सांभलो रे, अम्ह पासे छे पाम। ते तुम्हने आपुं अम्हे, आवे जो कोई काम रे, सांभल०
॥ ४ ॥ सुभटे जाण्युं रोगीया रे, कोई न दीसे पास। इहां ऊभा जुगतो नहीं, रोग भये

दूरे गया नास रे, सांभल० ॥ ५ ॥ उंवर रोगे पीडीयो रे, अंग थयो बिदरंग । पुत्रपडींगणो पूछती, हूं गई कोसंवी द्रंग रे, सांभल० ॥ ६ ॥ तिहां जईने लोकने रे, पूछ्यो वैद्यनो गेह । लोक मुखे में सांभल्यो, तीरथ भणी पहुंतो तेह रे, सांभल० ॥ ७ ॥ हूं रही तिहां वासर घणा रे, जोती वैद्यनी वाट। साधु थकी सुध लही सहू, मननो मिटीयो उचाट रे, सांभल० ॥ ८ ॥ हूं आवी इहां पूछती रे, अंगज मिलिवा काज। हूं कमला ए माहरो, सुत जाणज्यो सिरताज रे, सांभल० ॥ ९ ॥ कमलाने वचने करी रे, राणी थई निसंक । पुत्री गुणवंती सती, एहने किम लागे ? कलंक रे, सांभल० ॥ १० ॥ निरखि जमाई सासुहो रे, तृपति न पामे लेस । मुझ पुत्रीनो जोईज्यो, फलीयो कांइ भाग्य विसेस रे, सांभल० ॥ ११ ॥ रूपसुंदरी सुख पामीयो रे, उलसीया सहु अंग । ढाल थई पचवीसमी, 'जिनहरष' थया उछरंग रे, सांभल० ॥ १२ ॥

दूहा—पुन्यपालने सहु कह्यो, रूपसुंदरी जई गेह । मामे तेडी निज घरे, आण्या घणे सनेह १

सुंदर मंदिर आपीया, आपी धननी कोडि। पंच विषय सुख भोगवे, वे जण प्रेम सजोडि ॥२॥ एक दिन राजा नीसर्यो, पासे कुमर आवास। दीठी मयणा कुमरसुं, करती विविध विलास ॥३॥ मयणा कोई बीजो कर्यो, सुंदर पुरुष सरूप। कोढी परिहरियो परो, इम मनचिंते भूप॥४॥ पहिलो क्रोधवसेण में, काम अजुगतो कीध। बीजो मयणा मयणवसि, लंछण मुझ कुल दीध ५

ढाल २६ मी. "पीछोलारी पाले आंबा दोइ मोरीया म्हारा लाल आंबा०" एहनी–पुन्यपाल ततकाल जणावे रायने म्हारा लाल ज०, भाणेजीनी वात सहू समझायने म्हारा लाल स०। आव्यो नृप आवास कुमरने उमही म्हारा लाल कु०, प्रणमे मयणा कुमर चरण मन गहगही म्हारा लाल च० ॥ १॥ लज्जावंत नरिंद कहे बाई! सुणो म्हारा लाल क०, में तुझने मतिहीण दीयो छे दुख घणो म्हारा लाल दी० । मुझ अविनय अपराध असाध्य विसारजे म्हारा लाल अ०, उत्तम गुण गुणवंत! हीयामें धारजे म्हारा लाल ही० ॥ २ ॥

मयणा विनय महंत मधुर वयणे कहे म्हारा लाल म०, दोस न को तुम्ह तात! करम फल सहू लहे म्हारा लाल क०। सुख दुख करम संयोग सहू आवी मिले म्हारा लाल स०, करम महा वलवंत न टाल्यो ही टले म्हारा लाल न० ॥३॥ इम जाणी तुम्हे तात! जिणेसर धर्मसुं म्हारा लाल जि०, नव तत्त्व राचो राय! म राचो भर्मसुं म्हारा लाल म०। इम निसुणी नरनाथ धरम अंगीकर्यो म्हारा लाल ध०, अपकारे उपकार सुता ते आचर्यो म्हारा लाल सु० ॥४॥ वाल्हीने वलि विनय वहे गुण संग्रहे म्हारा लाल वहे०, धर्म पमाडे जेह जगतमें जस लहे म्हारा लाल ज०। कुमरी सम श्रीपाल जमाई निरखीयो म्हारा लाल ज०, उलट अंग न माइ हीयामें हरखीयो म्हारा लाल ही० ॥ ५ ॥ कीधो वांको राय कहे थयो पाधरो म्हारा लाल क०, मूंग मांहे जाणे घीय ढुल्यो थयो ए खरो म्हारा लाल ढु०। पुत्री ए पुन्यवंत फल्यो पुन्य एहने म्हारा लाल फ०, श्री जिनधर्म पसाय थया सुख जेहने म्हारा लाल थ०



श्रीपालजीको हाथीपर बैठाके धामधूमसे प्रजापाल राजा अपने राजदरबारमें ले जा रहा है।



॥ ६ ॥ गज ऊपरि आरोपि जमाई पुत्रिका म्हारा लाल ज०, लेई गयो निज गेह करी आरात्रिका म्हारा लाल क० । गोरी गावे गीत नगारा वाजीया म्हारा लाल न०, आडंबर उच्छाह गुणी जन गाजीया म्हारा लाल गु० ॥७॥ धण कण कंचण माल महेल नृप आपीया म्हारा लाल म०, सारी नगरी माहि सुजस थिर थापीया म्हारा लाल सु० । कुमर चड्यो रयवाडी रमवा किणि समे म्हारा लाल र०, देखे लोक अपार सहुने मन गमे म्हारा लाल स० ॥ ८ ॥ पूछे मांहो मांहि कुमर ए कुण अछे म्हारा लाल कु०, एक कहे नृप धूअ धणी बीजो न छे म्हारा लाल ध० । वचन सुण्यो श्रीपाल विच्छाय थयो घणूं म्हारा लाल वि०, छावीसमी 'जिनहरष' ढाल इण परि भणूं म्हारा लाल ढा० ॥ ९ ॥ सर्व गाथा ४२९ ॥

दूहा–रयवाडी जई आवीयो, पिण मनमें दिलगीर। जननी पूछे आज तूं, एहवो किम ? कहे वीर! १ चिंता मनमांहे किसी, पुत्र ! कहो मुझ तेह। चिंता कारण मायने, कुमर कहे ससनेह २

माहरे गुणे न ओलखे, तात गुणे नवि कोइ । मात गुणे न पिछाणीये, तिण मुझ चिंता होइ ३
सुसरा नामे ओलखे, सुसराथी परसिद्ध । तिहां रहिवो जुगतो नहीं, शास्त्रे कह्यो निसिद्ध ४
माय कहे मुझने गम्युं, सैन्य सजी ल्ये राज । अरिदल जीपो आपणा, वंस वधारो लाज ५
कुमर कहे माता ! सुणो, सुसराने वल राज । लेवुं मुझने नवि घटे, करसुं निजवल काज ६

ढाल २७मी. "मन मधुकर मोही रह्यो" एहनी— परदेसे जाई करी, लाऊं लच्छि कमाय रे । भुजवल लेस्युं वापनो, राज्य अरि समझाय रे, पर० ॥ १ ॥ माता कुमर भणी कहे, तूं वच्छ ! नान्हो वाल रे । वाट विषम परदेसनी, अटवी नदीयां नाल रे, पर० ॥ २ ॥ कुमर कहे कायर भणी, दोहिलो छे परदेस रे । मनमां सापुरसां तणे, भय नावे लवलेस रे, पर० ॥ ३ ॥ मयणासुंदरी वीनवे, काया छाया जेम रे । हूं तुम्ह साथे आवसुं, तुम्ह पाखे रहुं केम रे, पर० ॥ ४ ॥ तूं पगवंधन कामिनी !, भमवुं मुझ निसदीस रे । कामकरू के जालवुं, दुक्कर विसवा वीस रे,

श्री
पा
ल
रा
जा
का
रा
स



भरूच आते हुए रस्तेमें पहाडके नजदीक श्रीपालजीको विद्याधरसे मिलाप हुआ, इनके उत्तरसाधक होनेसे उसकी विद्या सिद्ध हुई विद्याधरने प्रसन्न होके दो और विद्या श्रीपालजीको दी, दोनों जने आगे चले पहाडके उपर धातुवादी (सुवर्णरस सिद्ध करनेवाले) मिले, यहाभी श्रीपालजीके उत्तरसाधक होनेसे सुवर्णरस सिद्ध होगया तयार हुआ सुवर्ण लेनेके लिये धातुवादी लोक हाथ जोडके श्रीपालजीसे प्रार्थना कर रहे है।

(पद्याङ्क ६)

पर० ॥ ५ ॥ जाया जणणी बे भणी, समझावी श्रीपाल रे । नवपद ध्यान धरी करी, चाल्यो लेइ करवाल रे, पर० ॥६॥ गामागर पुर पेखतो, पहुंतो इक वन मांय रे । दीठो बेठो पुरुषने, तरु तले वदन विच्छाय रे, पर० ॥ ७ ॥ कुमर कहे तूं कुण अछे ?, किम बेठो दिलगीर रे । विद्याधर छूं ते कहे, सांभल साहस धीर! रे, पर० ॥ ८ ॥ गुरुदत्त विद्या मुझ कन्हे, विधे जपी बहु वार रे । उत्तरसाधक बाहिरो, सिद्ध न थाये विचार रे, पर० ॥ ९ ॥ तूं उत्तरसाधक हुवे, तो सीझे मुझ काज रे । कुमर सहाये तेहने, विद्या सीधी साज रे, पर० ॥ १० ॥ विद्याधर दोइ ओषधी, कुमर भणी तव दीध रे । उपगारे उपगारडो, सिद्ध पुरुष पिण कीध रे, पर० ॥ ११ ॥ गुण सांभल जल तारणी, एक जडी छे एह रे । बीजी शस्त्रनिवारणी, महिमा तास कहेह रे, पर० ॥१२॥ आदर करि तेडी गयो, विद्याधर निज गेह रे । सोवन सिद्धि रस कूंपिका, कुमर सहाय्य करेह रे, पर० ॥ १३ ॥ ढाल कही सत्तावीसमी, वखतावर

नर जेह रे। कहे 'जिनहरष' जिहां तिहां, सुखीया थाये तेह रे, पर० ॥१४॥ सर्व गाथा ४५९

दूहा–कुमरभणी क्रितधनकीयो, चाल्यो सीखकरेह। भरुअच्छ नयरे आवीयो, सुखसुं तिहां रहेह १ इण अवसर हिवे तिण नगर, धवलसेठ धनवंत। पूरे प्रवहण पांचसे, खरी धरी मनखंत २ सुभट सहस दस राखीया, चोकी पहोरा काज। नृपआदेस लेई करी, सुभ महूरत दिन साज ॥३॥ बलिबाकुल देई करी, वाहण पूर्या जाम। ठाम थकी नवि चालते, धवल चिंतातुर ताम ४

ढाल २८ मी. "चरण करण धर मुनिवर वंदीये" एहनी–सेठे जई पूछी सीकोतरी, ते कहे नर वलवंतो जी। वलि आपे तो तुझ वाहण चले, बत्तीस लक्षण (गुण)वंतो जी, से०॥१॥ सांभलि सेठ खुसी मनमां थयो, वीनवीयो जई रायो जी। स्वामी! एक पुरुष मुझ दीजिये, वलि काजे सुख थायो जी, से०॥२॥ राय कहे जे परदेसी हुवे, नर एकलडो अनाथो जी। ते लेजे माहरी छे आगन्या, अवर म लाए हाथो जी, से० ॥ ३ ॥ सुभट धवलना



एक तरफ भरूचके राजसैनिक और दूसरी तरफ धवल सेठके सुभट खड़े हैं बीचमें खड़े हुए श्रीपालजी वीरताके साथ दोनोंसे लड़ रहे हैं



(पद्यांक ८७)

दूहा– तव धणु तूण धरी करी, केडे धस्यो कुमार। वोलाव्यो महाकालने, जाइस किहां? गमार! १ कायर जीपी गरजीयो, पिण माहरो वल जोइ। नासि म जाइस रांक ज्यूं, जो तूं क्षत्री होइ २ वयण सुणी पाछो वल्यो, मनमां नाण्यो बीह। वापूकार्यां किम रहे?, साहसीक नरसीह ३ कहे वयण इम कुमरने, रे रे भोला वाल!। मुझसुं जो कांकल करिस, पामिस मरण अकाल ४ कांइ मरे रे वालुया!, परकज्जे वेकाम। कुमर कहे मांटी अछे, तो कर मुझसुं संग्राम ५

ढाल ३० मी. "चढ्यो रण झूझवा चंडप्रद्योत नृप" एहनी– आवीयो ताम करि जोर वल फोरतो, वव्वराधीस मन रीस आणी। सुभट थट विकट साथे करी आपणा, रोस चढीयो वदे असुभ वाणी, आ०॥१॥ आव रे मूढ! जो रूढ मेल्हे नहीं, आज मृगराज सूतो जगाड्यो। धरणि धूजावतो सांमुहो आवतो, छोह धरि लोह सुहडे उडाड्यो, आ०॥ २॥ धरणि धडधडीय गडगडिय दम्मांम धुनि, दहदिसे परिवर्यां सवल सूरा। तुरंग भल पाखर्यां शस्त्र

हाथे धर्या, नाचता माचता रण सनूरा, आ० ॥ ३ ॥ वाण वरसे घणा सुहड हाथां तणा, गयण रवि रयणि अंधार कीधो। भाट भड ऊछली सयल खांडां तणी, कुमरने जे प्रथम घाव दीधो, आ० ॥ ४ ॥ झूझतो सत्रु दल सूड करतो प्रवल, गाजतो गाज आवाज करतो। केवि केवी हण्या सीस दूरे लुण्या, अंग उछरंग धरि जंग फिरतो, आ० ॥ ५ ॥ अधिक वाचाल मछराल श्रीपाल इम, घाव घमसाण हेराण कीधा। घाव ठामे रुहिर विंव धारा पडे, अरितणा जीव कण काढि लीधा, आ०॥६॥इम लड्यो आथड्यो कुमर अरि सैन्यसुं, वव्बरा-धीश ततकाल वांध्यो। वंदि करी आपणा साथमें आणीयो, सांमुहो किणही नवि तीर सांध्यो, आ० ॥७॥ धवल छोडावीयो कुमर वंधण थकी, कोप करी खडग धरी राय केडे। मारवा संचर्यो सेठ वार्यो कुमर, वांधीयो मारतां सुजस फेडे, आ० ॥८॥ राय महाकालने अभय देई करी, सहस दस धवलना सुहड सूरा। जेह नाठा हुता कुजस आवीखता, वृत्ति छेदी कीया

मन लाईजी सुख० । नृप कन्या पूजा वणावेजी सुख०, सहु देखीने सुख पावेजी सुख०
॥ ८ ॥ इक दिन नृप पूजा दीठीजी सुख०, राजाने लागे मीठीजी सुख० । ए सरिखो वर
कोई जोऊंजी सुख०, तेहने ए कन्या ढोऊंजी सुख० ॥ ९ ॥ इक दिन जिन पूजी कुमरीजी
सुख०, गंभाराथी नीसरी कुमरीजी सुख० । ततखिण ते बार जडाणाजी सुख०, सहु लोक थया
हैराणाजी सुख० ॥ १० ॥ कुमरी करे आतम निंदाजी सुख०, धिग धिग हूं पापिणी मंदाजी
सुख० । मुझमें कोई दूषण दीसेजी सुख०, आसातना विसवा वीसेजी सुख० ११ इम दुख करि
कन्या रोवेजी सुख०, नृप कुमरी सनमुख जोवेजी सुख० । राजा कहे सांभल बाईजी सुख०, तूं
चिंता म करिस काईजी सुख० १२ इहां दूषण तुझ नवि कोईजी सुख०, आसातना तुझथी नवि
होईजी सुख० । एकत्रीसमी ढाल थई पूरीजी सुख०, 'जिनहरष !' कथा छे अधूरीजी सुख० १३

दूहा— रायकहे सांभल सुता !, इहां दूषणछे मुज्झ । जिनगृहमां मनमांधरी, चिंता वरनी





श्रीपालजी रत्नद्वीपमें आये और समुद्र के बदार उतारा किया, जिनदास श्रावकने आकर ऋषभदेव स्वामीके मंदिरका समाचार कहा कि यह मार्ग बंद हुआ ऋषभदेवका मंदिर है उसको उघाडनेके लिये श्रीपालजीको प्रार्थना करी, इस लिये श्रीपालजी अपने कुटुंब परिवार सहित जिनदास श्रावकके साथ मंदिर जा कर स्नानादि पूजन पवित्र वस्त्र पहनके पूजनकी सामग्री सहित 'निसिहीउ' कहते हुए मंदिरमें प्रवेश करते हैं, श्रीपालजीकी नजर पडतेही ऋषभदेवके मंदिरका दरवाजा खुल जाता है और सबको प्रभुप्रतिमाके दर्शन होते हैं।

(पत्राक ८४)

वार जडाणा ए सही, तेतले थई सुरवाणि
तुज्झ १ सावद्य ए आसातना, तेह तणा फल जाणि । जिण कारण जिणहर जडिउ, तं निसुणो सहु
२ दोस न कोई कुमरीयह, नरवर दोस न कोइ । सोइज मयणमंजूसियह, होएसी भरतार ४
कोइ ३ जसु नर दिठ्ठहि होइस्ये, जिणहरु मुक्क दुवार । मासऽब्भितरे तसु नरह, आणेसु निश्चय लेवी ५
सिरि रिसहेसर ओलगणि, हूं चक्केसरी देवी । दिन दिन आवी देहरे, लोग राय निरखेह ६
राजलोक सहु हरखीया, गया सहु कोई गेह ।

ढाल २२ मी. "मोरो मन मोह्यो इण डूंगरे" एहनी— आज दिन मासनो छेहलो, जो हिवे
की वार रे । ऊघडे तो मिले देवनी, वाणी साची निरधार रे, आ० ॥१॥ कुमर असवार
थ्यो, साथे परिवार अपार रे । आवीया लोक नृप सुता, हरख धरि मनह मझार
आवतां तुरत जिनगृह तणा, ऊघड्या झटकि किमाड रे । कुमर जिनराय
ने वहु भांति दिखाड रे, आ० ॥ २ ॥ राय मन लाइ देखी रह्यो, नृप सुता थई

विन्नाण ॥१२॥ चाल—हिवे नाण विन्नाण न सूजे,छाती धडहड इम धूजे । अम्हथी दादुर गुण जाण, पाणी सरिसा जसु प्राण ॥ १३ ॥ पीहर तो परतटे रहीया, प्रीतम विरहागनि दहीया । प्रमदा इणिपरि विलवंती, दुख रोई राति गलंती ॥१४॥ दूहा—राति गलंती तिमरडी, पाहण फट्टइ जेण । पिण हीयडो फाटो नहीं,थयो कठिन विरहेण१५चाल—प्रिय विरह वियोगे पीडी, वलि सेठे कुद्रिष्टे भीडी । पामे नहीं किमही थाग, निज प्रीतमसुं बहु राग १६ सतीयां निज सील सखाई, तेहने तो चिंत न कांई । 'जिनहरख ! ' देवी वरदाई, पेत्रीसमी ढाल सुहाई १७

दूहा—इम विलवंती सुंदरी, रोवंती न रहाय । धवल अधरमी तिण समे, भासे पासे आय ॥१॥ हे सुंदरी ! तुम्हे सांभलो, म करो मनमें खेद । हूं तुम्हने सारीपरे, राखिस घणे उमेद ॥२॥ विधिविलसित अहिलो नही, नहीं केहनो जोर । पिण मुझ वयण म लोपसो, तुमने करूं निहोर ३ वयण सुणी मयणा विन्हे, जाण्युं एहना काम । सायरमां पिउ नांखीयो, रही अबोली ताम ४

ढाल ३६मी.देशी "वाणिणि वाउली रे, जसोदा फौजां पाछी वालि" एहनी— इण अवसर गयणंगणे रे, मिलीयो घनघोर अंधार, देवी चक्केसरी रे। मयणानी वाहरे आई, धाई वाहर आई धाइने, लागी नहीं कांई वार दे०। पवन चिहुंदिसि ऊपड्या, सायर कल्लोल अपार दे० ॥ १ ॥ जलनिधिना जल ऊछल्या रे, ऊधाण चढ्या असमान दे०। वाहण लागा डोलिवा, जाणे चंचल पींपल पान दे० ॥ २ ॥ वीज झलामल झलहले रे, वीहावती वाल गोपाल दे०। घोर घटा करि ऊंनम्यो, जलधर वरसे असराल दे० ॥३॥ लोल कल्लोल हिलोलतो रे, वाजे दधि गाजे पूर दे०। लोक सोक भय ऊपनो, कायर थयां सूर विनूर दे० ॥ ४ ॥ खाडा हत्थउ भैरवो रे, कर डमरूने डाक दे०। तिण अवसर प्रगट्यो तिहां, आव्यो मारंतो हाक दे०॥५॥ माणिभद्र वीजो वली रे, पूरणभद्र कपिल सरीर दे०। पिंगल चोथो दाखीयो, सिद्ध-चक्रना च्यारे वीर दे०॥६॥ मोगर हाथे साहिया रे, अन्याई करे चकचूर दे०। सेवक श्रीजिन-

श्रीपाल राजाका रास



श्रीपालजीकी दोनों स्त्रीयोंके ध्यानबलसे समुद्रमें एकदम तोफान ऊठता है चक्रेश्वरी आदि देवगण आके प्रगट होते है, दुर्बुद्धि मित्रको क्षेत्रपाल शिक्षा देता है, धवलशेठ श्रीपालजीकी दोनों स्त्रीयोंका शरण लेता है, जिससे चक्रेश्वरी देवी उसको जीवता छोडती है, दोनों स्त्रीयें अपने शील रक्षणके लिये चक्रेश्वरीसे प्रार्थना कर रही है।

(पत्राक ८९)

A RUT SAGAR P ES BOMBAY 2

राय जमाई जो हणे, धन द्यूं सवा कोडि । डूंब भणे ए सोहिलुं, काम करसुं दोडि, हि० ॥६॥ रावले डूंब जई करी, गाया भला गीत। वली विशेषे ते दिने, रीझाव्यो राय चीत, हि० ॥७॥ नृप तूठो बीडा दीये, गायन न लीयंत। राय जमाई सेहत्थे, लीउं जो दीयंत, हि० ॥८॥ हुकम दीयो श्रीपालने, वसुपाल नरिंद। बीडा देवाने गयो, नवि जाणे फंद, हि० ॥ ९ ॥ गायन सहु ऊठी करी, सीपा कंठ विलग्ग। एक भणे पुत्र ! ओलख्यो,इम रोवा लग्ग,हि०॥१०॥ एक कहे भाइ ! मिल्यो, बहु दिवसे आज। नारि थई इक डूंबणी, बेठी करी लाज,हि०॥११॥ माय थई माया करे, रहे रहे हिवे पूत !। झाली बांह वेसारीयो, वलीयो घर सूत, हि० ॥ १२ ॥ राजा अचरिज पामीयो, जोवो दैव सरूप। ढाल थई सेंत्रीसमी, 'जिनहरष' अनूप, हि० ॥१३॥

दूहा–कोप चढ्यो राजा कहे, वांभण डाभुं आज। ए कन्या वर दाखव्यो, गमी सहूमें लाज १ वली नृप पूछे कुमरने, दाखवीये निज वंस। निज जीभे सीपो कहे, कुल कीजे न प्रसंस ॥ २ ॥

चतुरंगी सेना सजो, मंडावो भारत्थ । तिण वेळा तुम्हे जाणिज्यो, कुल लहिस्ये मुझ हत्थ
॥ २ ॥अथवा प्रवहण मांहि छे, दोइ नारी गुणवंति । कुल कहिस्ये ते माहरो, मिटस्ये मननी
[illegible] ॥३॥ भूपति तेडी नारि बे, मूंकी पुरुष प्रधान। आवी हीयडे ऊमही, पूछे तव राजान ५

[illegible] १८ मी. देशी "कोइलो परवत धूंधलो रे लो" एहनी— बोली तव विद्याधरी रे लो,
[illegible] रे राजेसर !। सिंहरथ राय कमला तणो रे लो, ए नंदन श्रीपाल रे नरेसर !,
[illegible] रही रे लो, एहनी छूं बे अम्हे नार रे रा०। नृप सुणि अचरिज पामी-
[illegible] रे लो, [illegible] रे न०, बो० ॥ २ ॥ ततखिण बांध्यां डूंवडा रे लो, दीधी मार
[illegible] रे रा० । [illegible] डूंवा तणो रे लो, गायन बोल्या तिण वार रे न०, बो०॥३॥
[illegible] अम्हारो को नथी रे लो, सगपण पिण नहीं कोइ रे रा०। धवल अछे एक वाणीयो रे लो,
पीसा घूरि होइ रे न०, बो० ॥ ४ ॥ धन आपी अम्हने घणो रे लो एह कराव्यो काज रे

रा० । खोटो वोलीजे किसुं रे लो, तुम्ह आगले महाराज! रे न०, वो० ॥ ५ ॥ राय भयों रीसे घणूं रे लो, पाठवीया निज दूत रे रा० । धवल भणी बांधी करी रे लो, लेवा तुरत पहूत रे न०, वो० ॥ ६ ॥ बांह अपूठी बांधिने रे लो, लाया वेग तलार रे रा० । वाहो (मारो) वार म लाविसो रे लो, धवल तणो सिरधार रे न०, वो० ॥ ७ ॥ मारंतो छोडावीयो रे लो, करुणा करी श्रीपाल रे रा० । वछीयायत ए वाणीयो रे लो, हणीये किम? भूपाल! रे न०, वो० ॥ ८ ॥ बंधनथी छोडावीयो रे लो, दिवराव्यो सनमान रे रा० । सापुरुस रीस धरे नही रे लो, वलि न करे अभिमान रे न०, वो० ॥ ९ ॥ त्रिहुं मयणासुं भोगवे रे लो, सुख गमतां निसदीस रे रा० । कुमर प्रताप निहालिने रे लो, सेठ धरे मन रीस रे न०, वो० ॥ १० ॥ कुमर सूतो भूमि सातमी रे लो, वली मांड्यो मन द्रोह रे रा० । निसिभर बांधी डोरडी रे लो, मूंकी चंदन गोह रे न०, वो० ॥ ११ ॥ हणवा कुमर भणी चढ्यो रे लो, पालीकर संबाहि रे रा० । पाली सहित







ठाणा नगरीमें अपने महलकी तलाकी मंजलपर श्रीपालजी अकेले सो रहे थे, इधर धवलसेठ मौका पाके महलकी पूठमें गया और चन्दनगोहके गलमें रस्सी (डोरी) बांधकर उसको उपर चढाइ, जब कि वह चन्दनगोह सातवी मंजलपर जाके स्थिर हो गइ तब कमरमें तलवार बांधकर श्रीपालजी को मारनेके लिये खुद धवलसेठ रस्सी पकडकर उपर चढने लगा पापका घडा भर जानेके कारण आधे भागमें रस्सी टूट गइ, नीचे पडते हुए हृदयमें तलवार घुस जानेसे मर कर नरकमें गया, सवेरे नगरके लोक एकत्र होकर विविध बातें करने लगे, श्रीपालजीभी हकीकत सुनके सज्जनताके कारण आके उदास हुए पासमें बैठे हैं।

(पत्राक ०१)

पाछो पड्यो रे लो, खूती हीयडा मांहि रे न०, बो० ॥ १२ ॥ ततखिण प्राण तज्या तिहां रे लो, धवल गयो जम लोक रे रा०। देखी सहु कहे एहवो रे लो, पातिक न हुवे फोक रे न०, बो० ॥१३॥ माठी करणीथी इणे रे लो, फल पाम्या ततकाल रे रा० । कहे 'जिनहरष' भले भलो रे लो, कह्यो अडत्रीसमी ढाल रे न०, बो ० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ६५८ ॥

दूहा–क्रोध लोभ श्रीपालना, मनमां नहीं लिगार । प्रेतकार्य करि धवलनो, कीधो इम उपगार ॥१॥ तेडीने आसासना, सेठपुत्रने दीध। पिता तणो धन आपीयो, लोकांमें जस लीध ॥ २ ॥ कोसंबी संप्रेडीयो, उत्तमनी ए रीति । खीरनीर जिम सापुरुस, पाले पूरी प्रीति ॥ ३ ॥

ढाल ३९मी. देशी "नणदल ! हे नणदल!, चूडले जोवन झिल रहियो" एहनी– साजन ! हो साजन!, इक दिन रयवाडी गयो, सीपो मनमें रंग। साजन ! सेवक साथि लेई करी, वेसी चपल तुरंग ॥ १ ॥ सा० पुन्य कथा तुम्हे सांभलो, पुन्य कीयां आणंद । सा० कष्ट टले

॥ १ ॥ वीणा मांगी वामणे, आपे कुमरी अचंभ । आरंभ कीधो नादनो, थंम्या सहु जिम थंभ ॥२॥ सहु को देखे वामणो, नृपकन्या श्रीपाल । कुमरी वर वरवा भणी, कंठ ठवी वरमाल ॥३॥ रूप अनूप कीयो प्रगट, चंपापति तिण वार । मकरकेतु मन हरखसुं, परणावीयो कुमार ॥ ४ ॥ आप्या कंचण मणि रयण, आप्या वर आवास । कुमर तिहां सुख भोगवे, वारू लीलविलास ५

ढाल ४०मी. देशी "प्यारो प्यारो करती" एहनी—एक दिन रमवा नीकलीयो, वाटे एक पंथी मिलीयो । कुमरे परदेसी कलीयो, पूछे अचरिज अटकलीयो हो लाल ॥१॥ कहो पंथी ! किहां जासो ?, किहांथी आया मुझ भासो । दीठो कोई तुम्हे अवल तमासो, मुझ आगलि तेह प्रकासो हो लाल, क०॥२॥ पंथी कहे चतुर सुजाण !, कुंडनपुर नयर मंडाण । आव्यो तिहांथी सुप्रमाण, जाइस हूं पुर पैठाण हो लाल, क० ॥३॥ कणयापुरमांहे आयो, राजा विजयसेन कहायो । राणी कनकमाला मन भायो, जिणे पुन्य थकी सुख पायो हो लाल, क०॥४॥ त्रैलोक्य-

श्रीपाल राजाका रास

कुंडलपुर नगरमें वीणानादके वादमें जीतजानेपर गुणसुंदरी राजपुत्रीके साथ होता हुआ श्रीपालजी का विवाह दृश्य।



(पन्ना ९४)

सुंदरी तसु बेटी, जाणे रूप कला गुण पेटी। पासे रहे सुंदर चेटी, मननी आरति जिणे मेटी हो लाल, क० ॥५॥ कन्या थई जोवनवंती, दीठी बापे मलपंती। वर जोग्य थई गुणवंती, सरिखे पूगे मन खंती हो लाल, क० ॥ ६ ॥ सयंवर मंडप मंडाउं, सहू देसाधिप तेडाउं। इण सरिखो जो वर पाउं, तो बेटीने परणाउं हो लाल, क०॥७॥इम चिंतवि चित्त मझारा, मंडप रचीया विस्तारा। जगमांहे नर सिरदारा,आव्या लेई परिवारा हो लाल,क०॥८॥ वत्रीस जोयण इहांथी थाये, काल्हे वरिस्ये मनभाये। सीपो सांभलि तिहां जाये, पंखी जिम गयण पुलाये हो लाल,क०॥९॥ कणयापुर मांहे आयो,खुंधानो(कुब्ज)रूप बणायो। अचरिज देखण ऊमाह्यो, देखी मंडप सुखपायो हो लाल, क० ॥१०॥ प्रतिहार न दे पेसेवा, हथसंकलो दीयो देखेवा। आयो 'जिनहरख' वरेवा, चालीसमी ढाल कहेवा हो लाल, क० ॥ ११ ॥ सर्व ६९३

दूहा—पूठभाग ऊंचो घणो, ऊर सांकडो प्रदेस। ऊंची नीची नासिका, माथे कपिला केस

॥१॥ पूठे हूबड कूबडो, मोटो माथो जास। दांत गदहडा सारिखा, तेहवा दांतऊजास ॥२॥ कोटगली वांकी नली, पिंजर नयन विसाल। लाल पडे होठ लडवडे, इसो बणायो गात ॥३॥ राजहंस सम राजवी, बेठा करे कलोल। काग सरीखो कूबडो, आवी उभो लोल ॥४॥

ढाल ४१ मी. देशी "श्रीचंद्रप्रभु प्राहुणो रे" एहनी– कहो खूंधा! नरपति कहे रे, किम ऊभा? इहां आज रे। जिणे कारणे बेठा तुम्हे रे, ऊभो छूं तिणे काज रे, क० ॥१॥ हड हड हसीया राजवी रे, रूप बण्यो वाह वाह रे!!। तुझ सरिखो वर किहां मिले रे, एहवां राजवीयां मांह रे, क० ॥ २ ॥ कन्या नरवाहन चढी रे, स्वयंवर कीधो प्रवेस रे। ढोल दमामा वाजीया रे, सखर बणाव्या वेस रे, क० ॥३॥ श्रीपाल रूप मूलगो रे, देखे कन्या तेह रे। प्रमुदित चित्त थयो घणो रे, लागो निविड सनेह रे, क० ॥४॥ तीखे नयणे ताडिने रे, जोवे वारं वार रे। चुंबक लोह तणी परे रे, मन मिलीयो तिणवार रे, क० ॥ ५ ॥ प्रतीहारी आवी हिवे रे,

लाल छडी ले हाथ रे । स्वयंवर विचमें माल्हती रे, राजकुमरी करि साथ रे, क० ॥६॥ राजवीयाने ओलखे रे, जाणे देस विदेस रे। वंस तणी विरुदावली रे, संभलावे सुविसेस रे, क०॥७॥ छोडि चली सहु राजवी रे, जिम भाद्रवडे(भाद्रवे)छाण रे। थांभा पूतलीने मुखे रे, देवतणी थई वाण रे, क० ॥८॥ तथाहि—"यदि धन्यासि विज्ञासि, जानासि च गुणांतरं। तदैनं कुब्जकाकारं, वृणु वत्से ! नरोत्तमं ॥१॥" देव तणी वाणी सुणी रे, कुब्ज गले वरमाल रे। घाली कन्याये वर्यो रे, मूंकी सहु भूपाल रे, क० ॥९॥ धडहडीया कोपे करी रे, मानी नर मूंछाल रे। कहता रे रे ! कूबडा ! रे, मेल्हे परि वरमाल रे, क०॥१०॥ मूंक्यां मूंकां जीवतो रे, नहीं तो मूंकां जमलोक रे। राजसुताने कारणे रे, कांइ मरे तूं फोक रे, क०॥११॥ कांइ अदेखा राजवी ! रे, कांइ वडो करो रोस रे । रूप न पाम्यो जो तुम्हे रे, तो केहनो कहो दोस रे, क० ॥१२॥ नाक तणा मलनी परे रे, तुम्हने तज्या इणे वाल रे। आदरमान देई घणो रे,

मुझ कंठे ठवी वरमाल रे, क० ॥१३॥ भाग्य विना नवि पामीये रे, रायसुता सुकुमाल रे। कहे 'जिनहरष' मपी (लखी) जिस्यो रे, इकतालीसमी ढाल रे, क० ॥१४॥ सर्व गाथा ७११॥

दूहा—एहवा वयण सुणी करी, भड भडीया भूपाल। मारो मारो कूबडो, पाडी ल्यो वरमाल १ इम कही ऊठ्या मारवा, खूंधे देखाड्या हाथ। कायर थई नासी गया, मांडे कुण भारथ २ खूंध पराक्रम देखिने, विजयसेन राजान। तव बोल्यो वछ! आपणो, प्रगटो रूप वलवान ३ रूप कीयो निज मूलगो, जाणे अभिनव काम। राजा रलीयायत थयो, कुमरी सम वर पाम ४ परणावी नृप अंगजा, उच्छव करी अपार। सुंदर मंदिर आपीया, रयण कणय सिणगार ५ सीपो वर सुंदर प्रवर, त्रैलोक्यसुंदरी नार। जोडी जोडी सारिखी, हूंस हुइ किरतार ॥६॥

ढाल ४२ मी. देशी "वालूं रे सवायो वयर हूं माहरो रे" एहनी—रायसभाये आव्यो चर एकदा रे, कहे निसुणो श्रीपाल। देवक पट्टण धण कंचण भर्यो रे, राय तिहां धरापाल. रा०

॥ १ ॥ गुणमाला गुणमाला रागिणी रे, तेहने पुत्री रे एक । शृंगारसुंदरी जाणे सुरसुंदरी रे, जाणे विनय विवेक, रा० ॥२॥ श्रीजिन सासनना प्रवचन तणो रे, जाणे सयल विचार। पंच सखी छे ते पिण तेहवी रे, मांहो मांहे प्यार, रा० ॥ ३ ॥ प्रथम पंडिता १ बीजी नाम विचक्षणा २ रे, प्रगुणा ३ निपुणा ४ छेक। तिम दक्षा ५ जाणो सखी पांचमी रे, तन जूआ मन एक, रा० ॥ ४ ॥ पांच सखी आगल कहे कुमरी रे, जे नर जिनमत जाण। ते वर वरवो आपणने सखी ! रे, श्रीजिन आण प्रमाण, रा० ॥५॥ जेह समस्या रे मननी पुरिस्ये रे, ते आपण भरतार। पाचे सहाए रे समस्या पद कर्या रे, जिनमत जाणणहार, रा० ॥ ६ ॥ एहवी वाणी रे सांभलि राजवी रे, आव्या पंडित जाण। अवर समस्या रे पूरवे ते सहू रे, पिण मन भाव अयाण, रा० ॥ ७ ॥ इम ते कुमरी रे रहे छे परखती रे, पिण न मिले संकेत। कुमर सुणीने रे मनमांहे धर्युं रे, कुमरी वरिवा हेत, रा० ॥८॥ हार प्रभावे रे

ाव्यो पाटणें रे, पहूंतो कन्या आवास। सुंदर सहजे रे रूप सुहामणो रे, निरखी हरखी
न, रा० ॥९॥ कुमरे पूछ्यो रे चित्त समस्या कहो रे, निज मन धारी जेह। कुमरी केरी
पंडिता रे, तव बोली गुण गेह, रा० ॥१०॥ समस्या पदं "मन वांछित फल होइ ॥१॥"
खे ते रे एणे जो कही रे, तो सेमुख (स्वमुखे) कुण काम। हार ठवीने रे कंठे पूतली
र बोलावे ताम, रा० ॥११॥ ए किम बोले रे पत्थर पूतली रे, अचरिज लहे नृपबाल।
ाल थई ए वेतालीसमी रे, कहे 'जिनहरष' रसाल, रा० ॥ १२ ॥ पुत्तली वचनं यथा–
–अरिहंताइ सुनवह पद, निय मन धरे जे कोइ। निश्चय ते नर नारियह, मनवां-
फल होइ ॥ १ ॥ अथ विचक्षणा पठति–"अवर म झंखो आल ॥ २ ॥" पुत्तलिका
कथयति–अरिहंत देव सुसाहू गुरु, धम्म तु दया विसाल। मंतुत्तम नवकार पर, अवर
म झंखो आल ॥ २ ॥ प्रगुणा पठति–"करहु सफल अप्पाण ॥ ३ ॥" पुत्तलिका भणति–

आराहो धुरि देवगुरु, द्यो सुपत्ते दाण । तव संयम उवयारडो, करहु सफल अप्पाण ॥ ३ ॥ निपुणा पठति– "जित्तो लिख्यो निलाडि ॥४॥" पुत्तलिका वदति–रे मन ! अप्पा खंच करि, चिंत्ता जाल म पाडि । फल तित्तो ही पामीये, जित्तो लिख्यो निलाडि ॥ ४ ॥ ततो दक्षा पठति–" तसु तिहुअण जण दास ॥५॥" पुत्तलिका जल्पति– अत्थि भवंतर संचियो, पुन्न समग्गल जास । तसु बल तसु मइ तसु सिरि य, तसु तिहुअण जण दास ॥ ५ ॥ कुमर समस्या पूरवी, हरखी कुमरी चित्त । ए वर मुझ पुन्ये मिल्यो, पूरव भवनो मित्त ॥ ६ ॥

ढाल ४३ मी. देशी "मोती द्योने हमारो, राजिंदा ! मोती द्योने" एहनी–राजा सुणि रींझ्यो चतुराई, ए वर सरिखो मिलीयो वाई । जोइज्यो पुन्याई तणा फल, जोइज्यो पुन्याई, ए आंकणी ॥१॥ पुन्याईए आवी मिलीयो, जाणे अकाले आंवो फलीयो जो०, । पंच सखी साथे नृपबाला, सीपा कंठे ठवी वरमाला जो० ॥२॥ राजा परणावी निज कन्या, लोक सहू भाषे ए

आव्यो पाटणे रे, पहूंतो कन्या आवास। सुंदर सहजे रे रूप सुहामणो रे, निरखी हरखी उलास, रा० ॥९॥ कुमरे पूछ्यो रे चित्त समस्या कहो रे, निज मन धारी जेह। कुमरी केरी रे प्रेरी पंडिता रे, तव वोली गुण गेह, रा० ॥१०॥ समस्या पदं "मन वांछित फल होइ ॥१॥" सखीमुखे ते रे एणे जो कही रे, तो सेमुख (स्वमुखे) कुण काम। हार ठवीने रे कंठे पूतली रे, मुख वोलावे ताम, रा० ॥११॥ ए किम वोले रे पत्थर पूतली रे, अचरिज लहे नृपवाल। ढाल थई ए वेतालीसमी रे, कहे 'जिनहरष' रसाल, रा० ॥ १२ ॥ पुत्तली वचनं यथा–

दूहा–अरिहंताइ सुनवह पद, निय मन धरे जे कोइ। निश्चय ते नर नारियह, मनवांछित फल होइ ॥ १ ॥ अथ विचक्षणा पठति–"अवर म झंखो आल॥ २ ॥" पुत्तलिका कथयति–अरिहंत देव सुसाहू गुरु, धम्म तु दया विसाल। मंतुत्तम नवकार पर, अवर म झंखो आल ॥ २॥ प्रगुणा पठति–"करहु सफल अप्पाण ॥ ३ ॥" पुत्तलिका भणति–

आराहो धुरि देवगुरु, द्यो सुपत्ते दाण । तव संयम उवयारडो, करहु सफल अप्पाण ॥ ३ ॥ निपुणा पठति– "जित्तो लिख्यो निलाडि ॥४॥" पुत्तलिका वदति–रे मन! अप्पा खंच करि, चिंत्ता जाल म पाडि । फल तित्तो ही पामीये, जित्तो लिख्यो निलाडि ॥ ४ ॥ ततो दक्षा पठति–" तसु तिहुअण जण दास ॥५॥" पुत्तलिका जल्पति– अत्थि भवंतर संचियो, पुन्न समग्गल जास । तसु वल तसु मइ तसु सिरि य, तसु तिहुअण जण दास ॥ ५ ॥ कुमर समस्या पूरवी, हरखी कुमरी चित्त । ए वर मुझ पुन्ये मिल्यो, पूरव भवनो मित्त ॥ ६ ॥

ढाल ४३ मी. देशी "मोती द्योने हमारो, राजिंदा! मोती द्योने" एहनी– राजा सुणि रींझ्यो चतुराई, ए वर सरिखो मिलीयो वाई । जोइज्यो पुन्याई तणा फल, जोइज्यो पुन्याई, ए आंकणी ॥१॥ पुन्याईए आवी मिलीयो, जाणे अकाले आंबो फलीयो जो०, । पंच सखी साथे नृपवाला, सीपा कंठे ठवी वरमाला जो० ॥२॥ राजा परणावी निज कन्या, लोक सहू भाषे ए

चुम्मालीसमी ढाले थयो सुख्ख, कहे 'जिनहरप' टल्यां सहु दुख्ख, उ०॥१२॥सर्वगाथा ७६५
दूहा—राति रही निय मंदिरे, जाया जणणी ठेय। आयो दिन अणऊगते, निय दल मांहि
वलेय॥१॥प्रात थयो ऊगो दिवस, भाट भणे कल्याण। सेनानी तेडाविने, मासे इणपरि वाण
॥२॥ दूत मोकली वेगसुं, राय करावो जाण। कंध कुहाडे आय मिले, जो राखे निज प्राण॥३॥
तो लसकर पाछो वले, रहे ताहरी माम। आण न माने माहरी, तो कर मुझसुं संग्राम ॥ ४ ॥
सेनानी चर मोकल्यो, आव्यो जिहां भूपाल। अम्ह स्वामी त्रठीयो हठी, परतिख वयरी काल
॥५॥कंध कुहाडो करि मिले, तो पाछो वले कटक। नहीं तो गड ढंढोलस्ये, लेस्ये नगर अटक ६
ढाल ४५ मी. देशी "वे वे मुनिवर विहरण पांगुर्या रे" एहनी—दूत वयण सुणि उज्जेणी
धणी रे, मनमां कीधो एह विचार रे। सबलांसुं बल मांडीने वृथा रे, कोण करावे लोक संहार रे,
दू० ॥ १ ॥ कंध कुहाडो करि अवनीपती रे, सनमुख आवीने ततकाल रे। चतुर समयनो

जाण प्रवीण ते रे, भेट्यो महाराजा श्रीपाल रे, दू० ॥२॥ चंपापति तव आवीयो सासुहो रे, सुसराने दीधो सनमान रे। कंध कुहाडो दूर नखावीयो रे, बे बेठा पासे राजान रे, दू० ॥३॥ संतोप्यो सनमान्यो बहु परे रे, मालवपति चिंते मनमांइ रे। पार न दीसे एहनी रिद्धिनो रे, एहसुं सरभर कहो किम थाइ रे, दू० ॥४॥ तात! तुम्हे वर मुझ दीधो हुतो रे, ते परतिख जोइज्यो ए आज रे। कंध कुहाडो जेणे नखावीयो रे, ओलखिज्यो उंवर महाराज रे, दू०॥५॥ मालवपति मनमा विसमय थयो रे, वपु वपु जोइज्यो अचरिज एह रे। पुन्य सरिखो जगमें को नहीं रे, एहने फलीयो पुन्य अछेह रे, दू०॥६॥ सीपो मयणा निरखी हरखीया रे, मिलवा आव्या लोक अपार रे। सोहगसुंदरीने रूपसुंदरी रे, मिलिवा आव्यो सहु परिवार रे, दू० ॥ ७ ॥ श्री श्रीपाल नरेसर तिणि समे रे, दीधो नाटकनो आदेस रे। नाटक वृंद बुलावो माहरो रे, जोवे सहु नर नारि नरेस रे, दू० ॥८॥ नाटक आव्यो तिहां मिलि नाचवा रे,

श्रीपालने। दीधा वली हो. नव नाटक वृंद कि, साथे मुझ निहालिने। हि० ॥३॥ में कीधा हो. नाटक वहुवार कि, मयणा पति आगे खडी। इहां देखी हो. माय वाप कुटंब कि, लज्जा दुख सायर पडी। हि०॥ ४ ॥ परणावी हो. आडंवर भूर कि, मान घणो मुझ आपनो। सुख सघलां हो फीटी थया दुख्ख कि, फल पाम्यो में पापनो। हि०॥५॥ मुझ वहिनी हो. मयणा धन धन्न कि, ए सरिखी जग को नही। दुख मिटीया हो. सुख पाम्या एह कि, सील फल्यो एहने सही। हि०॥६॥ कुल खंपणि हो. हूं थई कुलमांहि कि, सहु पापिणिमांहि पापिणी। में सेव्यो हो. वहु भाति कुसील कि, लही कमाई आपणी। हि० ॥७॥ सी दाखूं हो. मुझ कर्मनी वात कि, तुम्ह आगलि हिवे हूं कहु। पातकना हो. पुन्यना माइ वाप! कि, परतिख फल देखो सहु। हि० ॥ ८ ॥ श्रीपाले हो अरिदमण कुमार कि, तेडाव्यो आदर करी। धण कंचण हो. आपी भरपूर कि, आपी वली सुरसुंदरी। हि० ॥ ९ ॥ सुरसुंदरी हो. अरि-

दमण कुमार कि, समकित पाम्या निरमलो। पूरवली हो. परे थाप्यो राय कि, मतिसागर मति ऊजलो। हि०॥१०॥जे हुंता हो. कोढी सय सात कि, रोग गमी ठाकुर कीया। मोटानो हो. जोवो उपगार कि, निज सरिखा करि थापीया । हि० ॥ ११ ॥ नव राणी हो. पटराणी कीध कि, शृंगारसुंदरीनी सखी । पांचे वली हो. चवदे ए नारि कि, विलसे अपछर सारिखी। हि०॥१२॥ नीसाणे हो. हिवे चलीयो राय कि, चंपा ऊपरि चालीयो। 'जिनहरषे' हो. एतलो अधिकार कि, ढाल छेंतालीसमी कीयो । हि० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ८०५ ॥

दूहा—कटक सुभटना थट गरट, मिलीया एका एक। सुसरा साला मावला, रणवावला अनेक १
रण रसीया कसीया जरद, पहिर्या टोप किरीट। बगतर पहिर्या लोहमय, जाणे काला कीट ॥२
पाखरीया हय वर प्रघल, मद झरता गजराज। गयणंगण छायो गिरद, गोला नाल अवाज ३
इम चलतो चंपापुरी, आव्यो नृप श्रीपाल। भडयुद्धे नासंतां ग्रह्यो, अजितसेन ततकाल ॥४॥

राज लीयो निज भुजवले, वेठो पिता तखत्त। पामी अनुपम संपदा, मोटो जास वखत्त ॥ ५ ॥ लज्जाणो राजा घणुं, मन धरतो विखवाद। नासंता माहरो थयो, लोकां विचे अपवाद ॥ ६ ॥ अजितसेन मन चिंतवे, हूं हुओ द्रोही अपार। राज लीयो भत्रीजनो, चितवीयो अपकार ॥ ७ ॥ गोत्र द्रोहथी जस नहीं, नृपद्रोह नीति विणास। वाल द्रोहथी गति नहीं, त्रिण्हे कर्यां अभ्यास ॥८॥ हिवे दीक्षा जो आदरूं, पालूं संयम सुद्ध। तो छूटूं ए पापथी, त्रूटे करम विरुद्ध ॥९॥ इम सुभ भाव विचारता, चढतां मन परिणाम। ज्ञानावरणी कर्मनो, क्षयोपसम थयो ताम १०

ढाल ४७ मी. देशी हींडोलणानी– सुभ भावना मने भावतां. जातीसमरण उतपन्न, दैव वसे लीयो सजम. विशुद्ध जाणी रतन्न। सुमति सूधी गुपति पाले. दोष टाले दुष्ट, क्षमा सागर नमत नागर. चतुर चारित्र करे पुष्ट ॥ १ ॥ धन धन्न माई! जे तजे इण परि क्रोध ॥ ए आंकणी ॥ महा-ज्ञानी महाध्यानी. अभयदानी जेह, भाविकने उपगार करता. चरण करण गुण गेह। विच-

सहुये नर सुर भव करी, भोगवि अनुपम सुख्ख। नवमे भव वलतां सही, लहिस्यो अविचल सुख्ख ३

ढाल ४९ मी. देशी "इम धन्नो धणने परचावे" एहनी-इण परे सुगुरु तणी सुणि वाणी, हरख्या राजा राणी रे। आराधे ऊलट मन आणी, सिद्धचक्र गुण खाणी रे, इ०॥१॥ श्रीनवकार गुणे सुभ भावे, जिनवर पूजा रचावे रे। जैन धरमसुं निज चित्त लावे, जीर्णोद्धार करावे रे, इ० ॥ २ ॥ सामायिक पोषध व्रत पाले, कुमति कदाग्रह टाले रे। श्रीजिनवर मारग उजवाले, पापथकी मन वाले रे, इ० ॥ ३ ॥ इण परि सिद्धचक्र आराधी, चढती सुरगति वांधी रे। इण भव पिण एहवी रिद्धि लाधी, कीरति त्रिभुवन वाधी रे, इ० ॥४॥ राजा राणी माइ संजुत्ता, समकित गुण सुभ चित्ता रे। आयु पूरण करि सुरगति पत्ता, पाम्या भोग समत्ता रे, इ०॥५॥ तिहां थकी चवि नर भव पामी, होस्ये सुर सुख कामी रे। च्यार वार इम सुर नर नामी, नवमे सहु सिद्धि गामी रे, इ०॥६॥ धन धन जगमें श्रीपाल नरिंदा, मयणासुंदरी सुख कंदा रे। पाली

चिरनंदो रे, भ० श्री० ॥७॥ ज्ञान पद सातमे दाख्यो, चारित्र पद आठमें भाख्यो रे, भ० श्री० ॥८॥ तप पद नवमे साख्यो, जेम वीरजीने वचने राख्यो रे, भ० श्री० ॥९॥ श्रीपालने मयणा लीधो, नवमे भवे कारज सीधो रे, भ० श्री० ॥१०॥ नवपद महिमा जाणी, 'जिनचंद्र' हीये मन आणी रे, भ० श्री० ॥११॥" इम जाणी नवपदसुं राता, सिद्धचक्र जे ध्याता रे। नृप श्रीपाल तणी परे माता, रहे सदा सुख साता रे, इ० ॥९॥ संवत सतरेसे चालीसे, चैत्रादिक सुजगीसे रे। सातम सोमवार सुभ दिवसे, पाटण विसवा वीसे रे, इ० ॥ १० ॥ श्रीखरतर-गच्छ महिमा धारी, जिनचंदसूरि जय कारी रे। शातिहरप वाचक सुखकारी, तास सीस सुविचारी रे, इ० ॥ ११ ॥ कहे 'जिनहरप' भविक नर सुणिज्यो, नवपद महिमा थुणि-ज्यो रे। उगुणपचासे ढाले गुणिज्यो, निज पातक वन लुणिज्यो रे, इ० १२ सर्व गाथा ८६१

॥ इति श्रीसिद्धचक्र महिमोपरि श्री श्रीपाल महाराजाका रास समाप्त मंगलं भवतु ॥

नवपद ओली करण विधि यत्र—

दिन क्रम	पदोंके नाम गुणणा	नवकर वाली	का०४ *	वर्ण	आहार
१	ॐ ह्रीँ नमो अरिहताण	२०-१२†	१२	श्वेत	चाँवल
२	ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाण	२०-८	८	लाल	गहु
३	ॐ ह्रीँ नमो आयरियाण	२०-३६	३६	पीलो	चणा
४	ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाण	२०-२५	२५	नीलो	मूग
५	ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूण	२०-२७	२७	कालो	उडद
६	ॐ ह्रीँ नमो दसणस्स	२०-५	६७	श्वेत	चाँवल
७	ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स	२०-५	५५	,,	,,
८	ॐ ह्रीँ नमो चारित्तस्स	२०-१०	७०	,,	,,
९	ॐ ह्रीँ नमो तवस्स	२०-२	५०	,,	,,

*१ काउस्सग्गके लोगस्सकी २, खमासमणोंकी ३, प्रदक्षिणाकी तथा ४ साथियोंकी संख्या।
† इस हिसाबसे तरह हजार गुणणा होता है।

नवपद ओलिकी विधि—

नवपद ओलीकी तपस्या शुभ मुहूर्त्तमे विधिपूर्वक गुरुमुखसे उच्चरे, बाद आसोज तथा चैत्रकी सुदि ७ से, जो कोइ तिथि तूटी होय तो ६ से और जो वधी होय तो ८ से पूनमतक ९ आविल पूरे करने, वर्षमे दो वखत करते साढेच्यार वर्षमे ९ ओली पूरी करनी, ओलीके दिनोंमे हमेशा नीचे लिखे मुजब कार्य करने—

१ साझ सवेर दोनों वखत राइदेवसी प्रतिक्रमण, तथा पडिलेहण, एव राइ आलोयणा पूर्वक द्वादशावर्तविधिसे गुरुवदन करके गुरुमुखसे पचक्खाण करे।

२ नव मदिरोंमे या नव प्रतिमाओंके आगे रोज नवपदके नव चैत्यवंदन करे।

३ त्रिकाल देवपूजा तथा दुपहरको[1] आठ थुइसे देववदन करे।

1 यद्यपि रत्नसागरमें दोप्रतिक्रमणोंके शिवाय तीन वखत ८थुइसे देववदन करना लिखाहै, परतु ऐसे करनेसे पाच वखत देववदन हो जाते हैं, शास्त्रोंमे पांच देववदन नहीं लिखे, राइ देवसी प्रतिक्रमणके दो और एक दुपहरका ऐसे तिन ही लिखे हैं।

पहले दिन अरिहंत पद आराधन विधि–सवेरे राइ प्रतिक्रमण, अरिहंत पद आराधन काउस्सग्ग १२ लोगस्सका तथा गुणणा माला २० या १२, सवेरकी पडिलेहण, गुरुवंदन, पच्चक्खाण, वासक्षेपपूजा, नव मंदिरादिमें नवपदके नव चैत्यवंदन करे।

अरिहंत पद चैत्यवंदन–जय जय श्रीअरिहंत भानु, भवि कमल विकाशी। लोकालोक अरूपि रुपि, नमस्तु नम्तु प्रकाशी।१। समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशी। शुक्ल चरम शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी। २। अतरग रिपु गण हणीए, हुए अप्पा अरिहंत। तसु पद पंकजमें रहत, 'हीरधर्म' नित संत। ३।

स्तवन–"पूजो मनरली, हाजो दादा कुशलसूरिंद पू०" ए देशी–श्रीतेरम गुण थानिके कंत, कर्मकुं भने श्रीअरिहंत, मन! मानले। अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन, मन० ॥ १ ॥ बादर काये मन वच योग, तनु तनुसे फुन रुद योग, मन०। सूक्षम कायते मन वच रोक, निजविर्ये ताकुं कर फोक, मन० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार, बेइन्द्रीने वास्य प्रचार, मन०। आदि समय रह्यो पनक सुजीव, सूक्षम लह्यो तिण जोग अतीव, मन० ॥३॥ एसा योगथी समय एक, हीनासंख गुणो करी छेक, मन०। समयासंखे जोग निरोध, कत्वा जो लह्यो जोगी सोध, मन० ॥ ४ ॥ वेद समे अनाहारता पाय, 'कुशल' कहे ते श्रीजिनराय, मन०। तेरमे गुणमें गुण समे देव, आपो सा जगकू नितमेव, मन० ॥ ५ ॥

थुइ–सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक सरूपो जी; केवल ज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनंत गुणे करी पूरो जी। त्रीने भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरो जी, बारे गुणा करी एहवा अरिहंत, आराधो गुण भूरो जी ॥ १ ॥

सिद्ध पद चैत्यवंदन–श्रीशैलेशी पूर्वप्रांत, तनु हीन तिभागी। पुव पओग पसंगसे, ऊरध गति जागी ॥ १ ॥ समय एकमें

लोक अंत, गये निगुण नीरागी । चेतन भूपे आतमरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दसण नाणथी ए, रूपातीत स्वभाव । सिद्ध भये तसु 'हीरधर्म', वंदे धरी शुभभाव ॥ ३ ॥

स्तवन–"थारे महेलां ऊपर मेह झबूके वीजली, म्हारा लाल ! झबूके०" ए देशी–अष्ट करम नग मास, हीना कोडी पूर्वमें, म्हारालाल ! हीना० । उत्कृष्टे करे वास, सयोगी धाममें, म्हारा० स० ॥ अजोगीके अंत, तजे भव भव्यता, म्हारा० त० । शैलेशी लहे कष्ट, दले गुणश्रेणिता, म्हारा० द० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल, रहे ते योगमें, म्हारा० र० । तेरस प्रकृतिनो अंत, करीने अंतमें; म्हारा० क० ॥ गमन करे नग रजसे, अक्रिय होयने, म्हारा० अ० । पुव पओग पसंग, स्वभाव अबंधने; म्हारा० स्व० ॥ २ ॥ इषु गुण नव परिमाण, जोजन लक्षे कही, म्हारा० जो० । वर्तुल विशदाभास, नीरालंबन सही, म्हारा० नी० ॥ मध्ये जोजन अष्ट, घनाकृति अंतमें, म्हारा० घ० । मक्षी पक्षथी हीन, भणी सिद्धांतमें, म्हारा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपब्भारा नाम, शिलासे जोजने; म्हारा० शि० । लघु अंगुल बत्तीस, प्रमाण अवगाहना, म्हारा० प्र० ॥ वृद्ध धनु शत पंच, गुणासे हीनता, म्हारा० गु० । मिलिया एकमेऽनंत, आबाधा नालही, म्हारा० आ० ॥ ४ ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य, सिरि ही जो सही, म्हारा० सि० । बीजो पद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें, म्हारा० ध० ॥ 'कुशल' भये जग जीव, मिलेगा तेहमें, म्हारा० मि० ॥ ५ ॥

थुइ–अष्ट करमकुं दमन करीने, गमन कियो शिववासी जी, अव्याबाध सादि अनादि, चिदानंद चिदरासी जी । परमातम पद पूरण विलासी, अघ घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टय शिवपद ध्यावो, केवलज्ञानी भासी जी ॥ १ ॥

आचार्य पद चैत्यवंदन–जिनपद कुलमुख रस अनिल, मित रस गुण धारी । प्रबल घन मोहकी, जिण तें चमुहारी ॥ १ ॥

सामलो ॥ १ ॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्य कारण भाव, सु० । कृत्वा जोग सुधामता, लब्धासव स्वभाव, सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जोगमें, वृद्धि लहे जुगमान, सु० । मध्ये वसु समये लहे, अंते द्वौ ते जाण, सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानस मुखा, कारण रम्य वलेण, सु० । आश्रा धस प्रकारता, सप्त प्राभृतका तेण, सु० ॥ ४ ॥ तद्रोधन रूपी भलो, चेतन संयम धाम; सु० । क्रूर घन मिल पद धर्ममें, 'कुशल' भवतु अभिराम, सु० ॥ ५ ॥

थुइ—करम अपचय दूर खपावे, आतम ध्यान लगावे जी, नारे भावना सुधी भावे, सागर पार उतारे जी । षट्खंड राजकुं दूर तजीने, चक्री संजम धारे जी, एहवो चारित्र पद नित वंदो, आतम गुण हितकारे जी ॥ १ ॥

तप पद चैत्यवंदन—श्रीऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण । बिहि अंतराये बाह्य मध्य, द्वादश परिमाण ॥ १ ॥ जसु कर मित आमोसही, आदिक लब्धि निदान । भेदे समता युत खिपे, इग्धन कर्म विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतप पद भलोए, इच्छा-रोध सरूप । वदनसे नित 'हीरधर्म !', दूर भवतु भवकूप ॥ ३ ॥

स्तवन—बारस भेद भण्या जिनराने, बाह्य मध्य तणा जग काने रे, शिवपद श्रेणि । तिण भव सिद्धि तणा वर ज्ञाता, जिनवर पिण तपना कर्ता रे; शिवपद श्रेणि ॥ १ ॥ समता सहिते जिन ते भारी, भली कर्म चमु पिण हारी रे; शिव० । जीव कनकसे कर्म कचोरा, दहे तप पावकका जोरा रे; शिव० ॥ २ ॥ तप तरुवरना कुसुम है ऋद्धि, देवनरना फल ते सिद्धी रे, शिव० ! पाप सकल है तमनी राशी, तप भानुसे जाये नासी रे; शिव० ॥ ३ ॥ जस्स पसाये लहिये चारू, लब्धि सगली जगहित कारू रे;

शिव० । अतिदुक्कर फुण साध्यता हीना, काम ताते चारू कीना रे, शिव० ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहिये, तप पदही चेतन चहिये रे; शिव० । पाठक 'हीरधर्म' कृपासे, नवपद 'कुशल'कु भासे रे, शिव० ॥ ५ ॥

थुइ–इच्छा रोधन तपते भाँख्यो, आगम तेहनो साखी जी, द्रव्य भावसे द्वादश दाखी, जोग समाधि राखी जी । चेतन निजगुण परिणति पेखे, तेहिज तप गुण दाखी जी, लब्धि सकलनो कारण देखी, 'ईश्वर'सेमुख भाँखी जी ॥ १ ॥

बादमें अष्टद्रव्यसे जिनपूजा स्नात्रादि करके १२ साथिये करे, १२ प्रदक्षिणा तथा खमासमणे देता हुआ आगे लिखे नमस्कार बोले.

अरिहंत पदके १२ गुणोंके खमासमण– नमस्कार–

१ अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः । २ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः । ४ चामर युग प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
५ स्वर्ण सिंहासन प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहंताय नमः । ६ भामडल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
७ दुदुभि प्रातिहार्य सयुताय श्रीअरिहंताय नमः । ८ छत्र त्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।
९ ज्ञानातिशय सयुताय श्रीअरिहंताय नमः । १० पूजातिशय संयुताय श्रीअरिहंताय नम. ।
११ वचनातिशय सयुताय श्रीअरिहंताय नमः । १२ अपायापगमातिशय सयुताय श्रीअरिहंताय नमः ।

मध्याह्नमें ८ थुइसे देववंदन, पच्चक्खाण पारना, आंबिल करना, फिर चैत्यवंदन, तीजे पहोरकी पडिलेहण, संध्याको देवदर्शन आरति, देवसी प्रतिक्रमण करे बाद राइसथारा पोरिसी भणाके सोवे ।

उपाध्याय पदके २५ गुणोंके खमासमण-नमस्कार—

१ श्रीआचारांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। २ श्रीसूयगडांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
३ श्रीठाणांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। ४ श्रीसमवायांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
५ श्रीभगवती सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। ६ श्रीज्ञाताधर्मकथांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
७ श्रीउपासकदशांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय०। ८ श्रीअंतगडदशांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः
९ श्रीअणुत्तरोववाइयदशांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपा० १० श्रीप्रश्नव्याकरणांग सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय०
११ श्रीविपाक सूत्र पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। १२ श्रीउत्पादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
१३ श्रीअग्रायणीपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। १४ श्रीवीर्यप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः
१५ अस्तिप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। १६ ज्ञानप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः
१७ सत्यप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। १८ आत्मप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
१९ कर्मप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। २० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
२१ विद्याप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः। २२ अवंध्य(कल्याण)प्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्या०
२३ प्राणा(वाय)वायप्रवादपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपा०। २४ क्रियाविशालपूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।
२५ लोकबिंदुसार पूर्व पाठन गुण संयुताय श्रीउपाध्यायाय नमः।

साधु पदके २७ गुणोंके खमासमण-नमस्कार—

१ प्राणातिपात विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
२ मृषावाद विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
३ अदत्तादान विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
४ मैथुन विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
५ परिग्रह विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
६ रात्रि भोजन विरमण व्रत संयुताय श्रीसाधवे नमः ।
७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१० वाउकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१३ एकेंद्रिय जीव रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१४ बेइंद्रिय जीव रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१५ तेइंद्रिय जीव रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१६ चउरिंद्रिय जीव रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१७ पचेंद्रिय जीव रक्षकाय श्रीसाधवे नमः ।
१८ लोभ निग्रह कारकाय श्रीसाधवे नमः ।
१९ क्षमा गुण युक्ताय श्रीसाधवे नमः ।
२० शुभ भावना भावकाय श्रीसाधवे नमः ।
२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसाधवे नमः ।
२२ संयम योग युक्ताय श्रीसाधवे नमः ।
२३ मनोगुप्ति संयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ।
२४ वचन गुप्ति संयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ।

२५ कायगुप्ति संयुक्ताय श्रीसाधवे नमः । २६ शीतादि द्वाविंशति परीषह सहन तत्पराय श्रीसाधवे नमः ।
२७ मरणांत उपसर्ग सहन तत्पराय श्रीसाधवे नमः ।

दर्शन पदके ६७ गुणोंकि खमासमण-नमस्कार—

१ परमार्थ संस्तवरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । २ परमार्थ ज्ञातृ सेवनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । ४ कुदर्शन वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
५ शुश्रूषारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । ६ धर्मरागरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
७ वैयावृत्यरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । ८ अर्हद्विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
९ सिद्ध विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । १० चैत्य विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
११ श्रुत विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । १२ धर्म विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
१३ साधुवर्ग विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । १४ आचार्य विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
१५ उपाध्याय विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । १६ प्रवचन विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
१७ दर्शन विनयरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । १८ "संसारे जिन. सार" इति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
१९ "संसारे जिनमत सार" इति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः । २० संसारे जिनमतस्थित साध्वादिसारं इति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शना०
२१ शंका दूषण रहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः । २२ कांक्षा दूषण रहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

२३ विचिकित्सा दूषण रहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२४ कुदृष्टि प्रशंसा दूषण रहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२६ प्रवचन प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२७ धर्मकथा प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२८ वादि प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
२९ नैमित्तिक प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३० तपस्वि प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३१ प्रज्ञप्त्यादि विद्याभृत्प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३२ चूर्णांजनादि सिद्ध प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३३ कवि प्रभावकरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३४ जिनशासने कौशल्य भूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३५ प्रभावना भूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३६ तीर्थसेवा भूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३७ धैर्य भूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३८ जिनशासने भक्तिभूषणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
३९ उपशम गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४० संवेग गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४३ आस्तिक्य गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४४ परतीर्थिकादि वंदन वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४५ परतीर्थिकादि नमस्कार वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४६ परतीर्थिकादि आलाप वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४७ परतीर्थिकादि संलाप वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४८ परतीर्थिकादि आसनादि दान वर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४९ परतीर्थिकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
५० राजाभियोगाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

५१ गणाभियोगाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः । ५२ बलाभियोगाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
५३ सुराभियोगाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः । ५४ कांतारवृत्त्याकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
५५ गुरुनिग्रहाकार युक्त श्रीसद्दर्शनाय नमः । ५६ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः।
५७ सम्यक्त्व चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शना० ५८ सम्यक्त्वं चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय०
५९ सम्यक्त्वं चारित्र धर्मस्याधारमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय० ६० सम्यक्त्वं चारित्र धर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप श्रीसद्दर्शनाय०
६१ सम्यक्त्व चारित्र धर्मस्य निधिसन्निभमिति चिंतनरूप श्रीस० ६२ अस्ति जीव इति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
६३ स च जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय० । ६४ स च जीवः कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्०न० ।
६५ स च जीव' कर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीस० ६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय०
६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थान युक्ताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ।

ज्ञान पदके ५१ गुणों (भेदों)के खमासमण-नमस्कार—

१ स्पर्शनेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः । २ रसनेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
३ घ्राणेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः । ४ श्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
५ स्पर्शनेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः । ६ रसनेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
७ घ्राणेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः । ८ चक्षुरिंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।

९ श्रोत्रेंद्रिय अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१० मनो अर्थावग्रहाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
११ स्पर्शनेंद्रिय ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१२ रसनेंद्रिय ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१३ घ्राणेंद्रिय ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१४ चक्षुरिंद्रिय ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१५ श्रोत्रेंद्रिय ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१६ मन ईहा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१७ स्पर्शनेंद्रिय अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१८ रसनेंद्रिय अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
१९ घ्राणेंद्रिय अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२० चक्षुरिंद्रिय अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२१ श्रोत्रेंद्रिय अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२२ मन अपाय श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२३ स्पर्शनेंद्रिय धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२४ रसनेंद्रिय धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२५ घ्राणेंद्रिय धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२६ चक्षुरिंद्रिय धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२७ श्रोत्रेंद्रिय धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२८ मनो धारणा श्रीमतिज्ञानाय नमः ।
२९ श्रीअक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
३० श्रीअनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
१ श्रीसज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
३२ श्रीअसज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
३ श्रीसम्यक् श्रुतज्ञानाय नमः ।
३४ श्रीमिथ्या श्रुतज्ञानाय नमः ।
३५ श्रीसादि श्रुतज्ञानाय नमः ।
३६ श्रीअनादि श्रुतज्ञानाय नमः ।

३९ श्रमणोपासक वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः । ४० संघ वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः ।
४१ कुल वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः । ४२ गण वैयावृत्यरूप श्रीचारित्राय नमः ।
४३ पशुपडगादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः। ४४ स्त्रीहासादि विकथा वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः ।
४५ स्त्रीआसन वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः । ४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः ।
४७ कुड्यंतरस्थित स्त्रीहावभाव सुणन वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारि० ४८ पूर्वभुक्त स्त्रीसंभोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः।
४९ अतिसरस आहार वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः । ५० अतिआहार वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५१ अंगविभूषा वर्जन ब्रह्मगुप्तिरूप श्रीचारित्राय नमः । ५२ अनशन तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५३ ऊनोदरी तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ५४ वृत्तिसंक्षेप तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५५ रसत्याग तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ५६ कायकिलेस तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५७ संलेषणा तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ५८ प्रायश्चित्त तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
५९ विनय तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ६० वेयावच्च तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
६१ सज्झाय तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ६२ ध्यान तपोरूप श्रीचारित्राय नमः ।
६३ कायोत्सर्ग तपोरूप श्रीचारित्राय नमः । ६४ अनंत ज्ञान संयुक्त श्रीचारित्राय नमः ।
६५ अनंत दर्शन संयुक्त श्रीचारित्राय नमः । ६६ अनंत चारित्र संयुक्त श्रीचारित्राय नमः ।

६७ क्रोधनिग्रह करणरूप श्रीचारित्राय नम' ।
६८ माननिग्रह करणरूप श्रीचारित्राय नमः ।
६९ माया निग्रह करणरूप श्रीचारित्राय नमः ।
७० लोभनिग्रह करणरूप श्रीचारित्राय नमः

तप पदके ५० गुणों (भेदों)के खमासमण–नमस्कार—

१ यावत्कथिक तपसे नमः ।
२ इत्वरिक तपसे नमः ।
३ बाह्य ऊनोदरी तपसे नमः ।
४ अभ्यंतर ऊनोदरी तपसे नमः ।
५ द्रव्यतः वृत्तिसक्षेप तपसे नमः ।
६ क्षेत्रतः वृत्तिसक्षेप तपसे नम. ।
७ कालतः वृत्तिसक्षेप तपसे नमः ।
८ भावतः वृत्तिसक्षेप तपसे नम' ।
९ कायकिलेस तपसे नमः ।
१० रसत्याग तपसे नमः ।
११ इंद्रिय कषाय योग विषयक सलीनता तपसे नमः ।
१२ स्त्री पशु पडकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीनता तपसे नमः ।
१३ आलोयण प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१४ पडिक्कमण प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे नम. ।
१६ विवेक प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१७ उत्सर्ग प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१८ तप. प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१९ छेद प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
२० मूल प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
२१ अनवस्थित प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
२२ पारंचिप प्रायश्चित्त तपसे नमः ।